Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

فَبِمَا رَحۡمَۃٍ مِّنَ اللّٰہِ لِنۡتَ لَہُمۡ ۚ وَلَوۡ کُنۡتَ فَظًّا غَلِیۡظَ الۡقَلۡبِ لَانۡفَضُّوۡا مِنۡ حَوۡلِکَ

(सूरः आलेइमरान: 160)

अनुवाद: तो अल्लाह की दया से तुम उनके साथ नरमी से पेश आए, और अगर तुम सख़्त और सख़्त दिल होते तो वे तुमसे दूर भाग जाते।

वर्ष- 10
अंक - 49
मूल्य 600 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

12 जमादिउल सानी, 1446-47 हिज्री क़मरी, 04 फ़तह 1404 हिज्री शम्सी, 04 दिसम्बर 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

अल्लाह तआला कोमलता बरतने वाला है,कोमलता को पसंद करता है कोमलता जिस चीज़ में भी हो उसे सुंदर बना देती है

عَنۡ عَائِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ قَالَ: اِنَّ اللّٰہَ رَفِیۡقٌ یُحِبُّ الرِّفۡقَ، وَیُعۡطِیۡ عَلَی الرِّفۡقِ مَا لَا یُعۡطِیۡ عَلَی الۡعُنۡفِ وَمَا لَا یُعۡطِیۡ عَلٰی مَا سِوَاہُ۔

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला कोमलता बरतने वाला है, कोमलता को पसंद करता है, कोमलता का जितना पुण्य देता है उतना कठोरता का नहीं देता। बल्कि किसी और नेकी का भी उतना पुण्य नहीं देता।

عَنۡ عَائِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا زَوۡجِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ قَالَ: اِنَّ الرِّفۡقَ لَا یَکُوۡنُ فِیۡ شَیۡءٍ اِلَّا زَانَہٗ وَلَا یُنۡزَعُ مِنۡ شَیۡءٍ اِلَّا شَانَہٗ۔

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र पत्नी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: किसी चीज़ में जितनी भी नर्मी और कोमलता होती है, उतनी ही वह उसके लिए शोभा का कारण बन जाती है, और जिस चीज़ से नर्मी और कोमलता छीन ली जाए, वह उतनी ही बदसूरत हो जाती है। यानी नर्मी और कोमलता में ही सुंदरता है।

(मुस्लिम, किताब अल-बिर्र वस्सिलह, बाब फ़ज़्लुर्रिफ़्क़)(बहवाला हदीक़तुस्सालेहीन, मुसन्निफः मलिक सैफ़ुर्रहमान साहिब, हदीस 805 से 806)

★ ★ ★

नर्मी से बातचीत की जाए ताकि दूसरों के दिमाग़ में बैठ जाए

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

बुराई को छोड़ने वाले आचारों में से नर्मी और अच्छी बात है और यह आदत जिस स्वाभाविक अवस्था से पैदा होती है उसका नाम 'तलाक़त' यानी खुलापन है। बच्चा जब तक बात करने में सक्षम नहीं होता, नर्मी और अच्छी बात की जगह तलाक़त दिखाता है। यही इस बात की दलील है कि नर्मी की जड़ जहाँ से यह शाख़ पैदा होती है, तलाक़त है। तलाक़त एक ताक़त है और रिफ़्क़ (नर्मी) एक आदत है जो इस ताक़त को उचित स्थान पर प्रयोग करने से पैदा हो जाती है। इसमें ख़ुदा तआला की शिक्षा यह है कि

लोगों से वही बातें कहो जो वास्तव में नेक हों। एक क़ौम दूसरी क़ौम का मज़ाक न उड़ाए, हो सकता है जिनका मज़ाक उड़ाया गया है वे ही बेहतर हों। कुछ औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक न उड़ाएं, हो सकता है जिनका मज़ाक उड़ाया गया है वे ही अच्छी हों। और दूसरों में दोष न ढूँढो। अपने लोगों के बुरे-बुरे नाम न रखो। बदगुमानी की बातें न करो और न दोषों को खोद-खोद कर पूछो। एक-दूसरे से नाराज़गी न जताओ। किसी के बारे में वह बदनामी या इल्ज़ाम न लगाओ जिसका तुम्हारे पास कोई सबूत नहीं है। और याद रखो कि हर अंग से पूछताछ होगी और कान, आँख, दिल, हर एक से पूछा जाएगा।

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 10, पृष्ठ 350)

इसी तरह फ़रमाया: दुश्मन यदि कठोर बोले तो उसके मुक़ाबले में कठोरता करने से फ़ायदा नहीं होता, क्योंकि कठोर शब्दों से बरकत दूर हो जाती है। (मल्-फ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 273)

इसके अलावा फ़रमाया:

'मुदारात' उसे कहते हैं कि नर्मी से बातचीत की जाए ताकि दूसरों के दिमाग़ में बैठ जाए और हक़ का इस तरह इज़्हार करना कि एक शब्द भी बाकी न रहे और सब अदा हो जाए। और 'मदाहना' उसे कहते हैं कि डर कर हक़ को छिपा लेना, दबकर रह जाना। अक्सर देखा जाता है कि नर्मी से बातचीत करके फिर गर्मी पर आ जाते हैं। यह उचित नहीं है कि हक़ को पूरा-पूरा अदा करने के लिए एक हुनर चाहिए। वह व्यक्ति बहुत बहादुर है जो ऐसी ख़ूबी से हक़ को बयान करे कि बड़े गुस्से वाले आदमी भी उसे सुन लें। अल्लाह ऐसों पर राज़ी होता है। हाँ, यह ज़रूर है कि हक़गो से लोग राजी न हों, भले ही वह नर्मी भी करे, मगर इसके बीच ऐसे भी होते हैं जो अच्छा कहने लगते हैं। (मल्-फ़ूज़ात, जिल्द पंजम, पृष्ठ 225 से 226)

नर्मी के साथ और अक़्ल से काम लेते हुए बात की जाए ...क्योंकि...जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता बल्कि गुस्से में आ जाता है, वह दूसरे को कदापि नहीं समझा सकता

(हज़रत मिर्जा बशीरुद्दीन महमूद अहमद, खलीफ़तुल मसीह सानी, अल-मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से)

सैय्यदना हज़रत अक़दस मुस्लेह मौऊदरज़ियल्लाहु अन्हुआयत क़ुरआनी "اُدۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ بِالۡحِکۡمَۃِ وَالۡمَوۡعِظَۃِ الۡحَسَنَۃِ وَجَادِلۡہُمۡ بِالَّتِیۡ ہِیَ اَحۡسَنُ" (अन-नहल: 125) की तफ़्सीर करते हुए तबलीग़े इस्लाम के गुर सिखाते हुए फरमाते हैं:

'हिकमत' के मानी 'हिल्म' (सहनशीलता) के भी होते हैं। फ़रमाया कि नर्मी के साथ और अक़्ल से काम लेते हुए बात की जाए। क्योंकि जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता बल्कि जल्दी तेज़ होकर गुस्से और जोश में आ जाता है, वह दूसरों को हरगिज़ नहीं समझा सकता।

नबूवत के मानी की रू से यह मतलब होगा कि इलाही कलाम की मदद से लोगों को दीन की तरफ बुलाओ। जो दलीलें ख़ुद क़ुरआन करीम ने दी हैं उन्हीं को पेश करो। अपने पास से ढकोसले न पेश करो। आह! अगर इस गुर को मुसलमान समझते तो यहूदियत और ईसाइयत को खा जाते। हमारा हथियार क़ुरआन करीम ही है जिसकी निस्बत अल्लाह तआला फरमाता है "وَجَاھِدۡھُمۡ بِہٖ" (अल-फुरकान: रुकू 5)। इस क़ुरआन की तलवार लेकर दुनिया से जिहाद के लिए निकल खड़े हो। पर अफ़सोस कि आज दुनिया की हर चीज़ मुसलमान के हाथ में है लेकिन अगर नहीं तो यही तलवार, जिसे लेकर निकल खड़े होने का हुक्म था।

'مَا یَمۡنَعُ مِنَ الۡجَھۡلِ' की रू से आयत का यह मतलब बनेगा कि तुम ऐसे तरीक़े से कलाम करो जिसे दूसरा समझ सके और उससे उसकी ग़लतफहमी दूर हो सके। यानी वह बात होनी चाहिए जो जहालत का क़लझ क़म करे और मुख़ातिब की समझ के मुताबिक़ हो। इसलिए हदीस में भी आता है: "اَمَرَنَا رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّمَ اَنۡ نُکَلِّمَ النَّاسَ عَلٰی قَدۡرِ عُقُوۡلِھِمۡ" (फ़िरदौसुल अख़बार लिद्दैलमी, फ़स्ल 'अम्र' - 'अमरना') कि हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम ने हुक्म दिया कि लोगों से उनकी समझ

और इदराक (ग्रहणशक्ति) के मुताबिक़ कलाम करो। कुछ लोग लेक्चर देते हैं तो मोटे-मोटे लफ़्ज़ और इस्तिलाहें (पारिभाषिक शब्द) इस्तेमाल करके रौब डालना चाहते हैं। इन तक़रीरों से जाहिलों पर रौब तो ज़रूर पड़ जाता होगा, मगर फ़ायदा उनकी तक़रीर से कोई नहीं उठाता।

शेष पृष्ठ 07 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत अबू खैसमा रज़ियल्लाहु अन्हु छप्पर के दरवाज़े पर खड़े हुए और उनकी बीवियों ने जो उनके लिए इंतेज़ाम किया हुआ था वह देखा तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो सख़्त चिलचिलाती धूप, सख़्त गर्मी और लू के सफ़र में हैं और अबू खैसमा ठंडे सायों में, उम्दा खानों और खूबसूरत बीवियों और अपने माल-मवेशियों में रह रही हैं। यह हरगिज़ इंसाफ नहीं है।

फिर उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं तुम में से किसी के पास भी नहीं आऊँगा, यहाँ तक कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुँच जाऊँ।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को मुख़ातिब होकर फ़रमाया:

ऐ मुआज़! अगर तेरी उम्र लंबी हुई तो तू देख लेगा कि वादी-ए तबूक बाग़ों से भर गई है।

मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वह्यी के माध्यम से मालूम हो गया होगा कि हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु यह जगह देखेंगे और वह वादी दरख़्तों और बाग़ात का मजमूआ बन जाएगी।

यह नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मोजिज़े ही की बरकत है कि आज तबूक में इस कसरत से पानी मौजूद है कि मदीना और ख़ैबर के सिवा हमें कहीं इतना पानी देखने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ, बल्कि हक़ीकत यह है कि तबूक का पानी उन दोनों जगहों से भी ज़्यादा है। इस पानी से फ़ायदा उठाकर अब तबूक में हर तरफ बाग़ लगाए जा रहे हैं और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक तबूक का इलाक़ा बाग़ों से भरा हुआ है और दिन-ब-दिन भरता जा रहा है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ देते हुए फ़रमाया:

अल्लाह तआला राहे ख़ुदा में हिफ़ाज़त करने वालों की हिफ़ाज़त करने वालों पर रहम करे।

लोगों में से या जानवरों में से तुमने जिस-जिस की हिफ़ाज़त की है, उनमें से हर जान और जानवर के बदले तुम्हें एक-एक क़ीरात अज्र मिलेगा।

ग़ज़वा-ए तबूक के हालात व वाक़िआत की रोशनी में सीरते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पाकीज़ा बयान
सानिहा रब्वा के ज़ख़्मियों, पाकिस्तान और बंगलादेश के अहमदियों नेज़ा मज़लूमीने फिलिस्तीन के लिए दुआओं की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 अक्टूबर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

ग़ज़वा-ए तबूक का आजकल वर्णन हो रहा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस ग़ज़वा के लिए रवाना हुए, इस बारे में तारीख हमें मज़ीद यह बताती है कि इस्लामी लश्कर की तबूक के लिए रवानगी के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहला पड़ाव 'ज़ुल-खुशुब' मकाम पर किया। 'ज़ुल-खुशुब' मदीना से एक रात की मुसाफ़त पर शाम के रास्ते पर एक वादी है जहाँ बड़ी तादाद में पानी के चश्मे हैं। वहाँ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ ज़ुहर और अस्र जमा करके अदा करनी शुरू फरमाई।

इस सफ़र के दौरान ज़ुहर और अस्र और मगरिब व इशा मुस्तकिल तौर पर ही जमा करके अदा करते रहे।

(किताबुल मग़ाज़ी लिल वाकिदी, जिल्द 2, पृष्ठ 386, बाब ग़ज़वा तबूक, दारुल कुतुबिल इल्मिया 2004 ई.) (दायरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 484, बज़्मे इक़बाल लाहौर) (फरहंगे सीरत, पृष्ठ 114, ज़वार एकेडमी पब्लीकेशन्स कराची 2003 ई.))

दुराने सफ़र जहाँ-जहाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पड़ाव किया, उसके बारे में मुकम्मल तफ्सीलात तो नहीं मिलतीं, उनमें से बज़ मकामात के सिर्फ नाम दर्ज हैं, वह भी आगे अगर मौक़ा मिला तो इनशा अल्लाह बयान हो जाएँगे। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ग़ज़वा-ए तबूक में थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कूच करने से पहले सूरज ढल गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर और अस्र जमा कीं और अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सूरज ढलने से पहले चल पड़ते तो ज़ुहर में ताख़ीर करते, यहाँ तक कि अस्र के लिए उतरते और मगरिब में भी ऐसा ही करते थे। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चलने से पहले सूरज ग़ुरूब हो जाता तो मगरिब और इशा जमा करते और अगर सूरज ग़ुरूब होने से पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चल पड़ते तो मगरिब में ताख़ीर करते, यहाँ तक कि इशा के लिए उतरते, फिर दोनों को जमा करते।

(सुनन अबी दाऊद, किताब सलातुस्सफ़र, बाबुल जमई बैनस्सलवातैन, हदीस 1208 व 1210)

ज़िक्र आता है कि इस सफ़र में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु अन्हु को इमामत की सआदत मिली, जिसका वाक़िया यूँ है। हज़रत मुग़ीरा बिन शोअबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ग़ज़वा-ए तबूक में शरीक हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़ज़ाए हाजत के लिए फज्र की नमाज़ से पहले तशरीफ ले गए। मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ पानी की छागल उठा ली, यानी पानी उठाकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ही चल पड़ा। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरी तरफ वापस आए तो मैं फासिले पर खड़ा था, तो मैं छागल से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ पर पानी डालने लगा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों हाथ तीन मर्तबा धोए। यहाँ यह वुज़ू का तरीक़ा बयान कर रहे हैं, यानी सफ़र में किस तरह वुज़ू किया।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना चेहरा मुबारक धोया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने बाजुओं को अपने जुब्बा से बाहर निकालने लगे, लेकिन जुब्बे की आस्तीनें तंग थीं, इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ जुब्बे के अन्दर दाखिल किए और अपने बाज़ू जुब्बे के नीचे से निकालकर कहनियों तक धोए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने मोज़ों पर मसह

किया, यानी जराबें उस वक़्त पहनी हुई थीं तो जराबों पर मसह किया, उन्हें साफ किया। फिर आगे चल पड़े। मुग़ीरा कहते हैं कि मैं भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ आगे चला, यहाँ तक कि हमने लोगों को पाया कि वह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु अन्हु को आगे कर चुके थे, वह उनको नमाज़ पढ़ा रहे थे। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दो में से एक रकअत पाई, यानी वह लोग एक रकअत पहले पढ़ चुके थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दूसरी रकअत लोगों के साथ पढ़ी। जब हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सलाम फेरा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी नमाज़ पूरी करने के लिए खड़े हुए, तो इस बात ने मुसलमानों में घबराहट पैदा कर दी और बकसरत तस्बीह करने लगे। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी नमाज़ ख़त्म कर ली तो लोगों की तरफ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया कि तुमने ठीक किया या फ़रमाया अच्छा किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ अपने वक़्त पर अदा करने की वजह से उनकी तारीफ की।

(सहीह मुस्लिम मुतरजिम, जिल्द 2, पृष्ठ 184-185, किताबुस्सलाह, बाब तक़दीमुल जमाअत मन युसल्ली बिहिम इज़ा तअख़्ख़रल इमाम, हदीस 632)

क़ौमे समूद के खंडहरों से गुज़रने का वर्णन भी मिलता है। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब ग़ज़वा-ए तबूक के दुरान 'हिज्र' में क़ियाम फ़रमाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें इरशाद फ़रमाया कि वह उसके कुएँ से न पिएँ और न उससे पिलाएँ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा कि हमने तो उसके पानी से आटा गूँध लिया है और हमने अपने जानवरों को पानी पिलाया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें इरशाद फ़रमाया कि वह गूँथा हुआ आटा फेंक दो और जो पानी पास है उस पानी को भी उंडेल दो और एक रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खाना फेंकने का इरशाद फ़रमाया और हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसने इस पानी से आटा गूँधा है, उसे फेंक दो। यानी इस जगह से लिए गए पानी से गूँथने वाले आटे को फेंकने का इरशाद फ़रमाया।

(सहीहुल बुख़ारी, किताब अहादीसिल अम्बिया, बाब कौलिल्लाहि तआला 'वा इला समूदा अख़ाहुम सालेह', हदीस 3378)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि न इस कुएँ का पानी पियो और न इससे वुज़ू करो, बल्कि इसके पानी से जो आटा तुमने गूँथा हुआ है, उसे ऊँटों को खिला दो, ख़ुद उसमें से हरगिज न खाओ।

(तारीखुत तबरी, जिल्द 2, पृष्ठ 183, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 2012 ई.)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि वह उस कुएँ से पानी लें जहाँ हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी पानी पीने के लिए आया करती थी और इस कुएँ से न लें। यह जो कुआँ था, उससे मना किया था कि वहाँ से नहीं लेना, बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उस कुएँ से लें जहाँ हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी पानी पीने के लिए आया करती थी।

(सहीहुल बुख़ारी, किताब अहादीसिल अम्बिया, बाब कौलिल्लाहि तआला 'वा इला समूदा अख़ाहुम सालेह', हदीस 3379)

शारहे बुख़ारी इब्ने हजर अस्कलानी के मुताबिक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस कुएँ, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी के कुएँ का इल्म वही के ज़रिए से हुआ था।

(फतहुल बारी शर्हे सहीहिल बुख़ारी, जिल्द 6, पृष्ठ 469, क़दीमी किताब खाना, कराची)

एक रिवायत में है कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम 'हिज्र' से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उन लोगों की बस्तियों में दाख़िल न हो जिन्होंने ज़ुल्म किया, मगर यह कि तुम रो रहे हो। बड़ी खौफ की, ख़शियत की हालत होनी चाहिए। जिन क़ौमों पर अज़ाब आया था, उनकी बस्तियों से गुज़र रहे हो तो अल्लाह तआला से दुआएँ करते हुए यहाँ से गुज़रो, मुबादा तुम्हें वह मुसीबत पहुँचे जो उन्हें पहुँची है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी चादर से अपना चेहरा मुबारक ढाँप लिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सवारी पर सवार थे।

(सहीहुल बुख़ारी, किताब अहादीसिल अम्बिया, बाब कौलिल्लाहि तआला 'वा इला समूदा अख़ाहुम सालेह', हदीस 3380)

एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना सर ढाँप लिया और रफ्तार तेज़ कर दी, यहाँ तक कि वादी पार कर ली।

(सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब नुज़ूलुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमिल हिज्र, हदीस 4419)

यह जो 'हिज्र' नाम है, यह एक इलाक़ा है। इसका परिचय यह है कि मदीना से तबूक जाते हुए यह इलाक़ा आता है। वहाँ पर हज़रत सालेहअलैहिस्सलाम की क़ौम 'समूद' आबाद थी। इस इलाक़े का नाम 'हिज्र' था। आजकल यह इलाक़ा 'मदाइने सालेह' के नाम से मशहूर है। अल्लाह ने इस क़ौम को कसीर नेअमतों से नवाज़ा। सरसब्ज़ खेत थे, बहते चश्मे थे, खेती-बाड़ी का वसीअ इंतज़ाम था, खजूर और दूसरे फलों के बाग़ात थे। बेमिसल क़ुव्वत और सलाहियत के हामिल थे यह लोग। बड़ा पोटेंशियल था इन लोगों का, मेहनत करने वाले थे और अल्लाह तआला ने क़ुदरती वसाइल से, ज़राइए से नवाज़ा भी खूब हुआ था। मतलब यह है कि यहाँ तक उनकी स्किल थी कि यह लोग पहाड़ों में घर बनाने वाले थे। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी उनके लिए बतौर निशान थी, लेकिन उन्होंने उसकी कुंचें काट दीं। इस पर अल्लाह ने उन्हें अज़ाब से तबाह व बर्बाद कर दिया। क़ुरआन करीम में इस क़ौम का नाम 'अस्हाबुल हिज्र' आया है और क़ुरआन करीम में 'अल-हिज्र' नाम की सूरत भी है।

(अल-लौलौउल मक्नून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 485, दारुस्सलाम) (दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 490, बज़्मे इक़बाल लाहौर))

इस सफ़र में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँटनी गुम होने का वाक़िया भी मिलता है। इसकी तफ्सील यूँ है कि जब रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तबूक की तरफ तशरीफ ले जा रहे थे तो रास्ते में एक जगह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँटनी 'क़सवा' गुम हो गई। सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसे ढूँढने के लिए निकले। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास हज़रत उमारा बिन हज़्म रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, जो बैअते अकबा में शामिल हुए थे और बदरी सहाबी थे। हज़रत उमारा रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ेमे में 'ज़ैद बिन सलत' था, जो यहूदी क़बीला 'बनू क़ैनक़ा' से तअल्लुक रखता था और यहूदी था, फिर मुसलमान हुआ, लेकिन मुसलमान ऐसा ही था कि उसने मुनाफिक़त का इज़्हार किया, पूरी तरह ईमान मज़बूत नहीं था। तो इस तरह यहाँ भी उसका इज़्हार हुआ है और वह इस तरह हुआ कि ज़ैद ने ख़ेमे वालों से कहा, जबकि हज़रत उमारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास मौजूद थे, कि क्या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह दावा नहीं करते कि वह नबी हैं और वह तुम्हें आसमान की ख़बरों से आगाह करते हैं, लेकिन हाल यह है कि वह ख़ुद नहीं जानते कि उनकी ऊँटनी कहाँ गई है? ज़ैद अपने ख़ेमे में यह बात कर रहा था, तो ऐन उस वक़्त रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमारा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, जबकि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास थे, कि एक शख़्स ने यह कहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुम लोगों को तो बताता है कि वह नबी है और गुमान करता है कि वह तुम लोगों को आसमान की ख़बरों से आगाह करता है, जबकि वह ख़ुद नहीं जानता कि उसकी ऊँटनी कहाँ है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! मैं नहीं जानताइसके अतिरिक्त जिसका अल्लाह तआला ने मुझे इल्म दिया है। ग़ैब का इल्म तो मैं नहीं जानता। अल्लाह तआला जो बताता है, मैं वही बताता हूँ और यक़ीनन अल्लाह तआला ने मुझे ऊँटनी के मुतअल्लिक बता दिया है कि वह फलाँ-फलाँ घाटी में है, और एक घाटी की तरफ इशारा किया। अल्लाह तआला ने उस मुनाफिक की बात सुनके फौरन ग़ैरत दिखाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कश्फन बता भी दिया या इलहामन बताया कि वहाँ फलाँ जगह है। उसकी महार एक दरख़्त से अटकी हुई है। पस जाओ और उसे मेरे पास ले आओ। पस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम गए और उसे ले आए। फिर हज़रत उमारा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने ख़ेमे की तरफ गए और कहा: अल्लाह की क़सम! आज एक अजीब बात हुई है। अभी रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें एक शख़्स की बात के मुतअल्लिक बताया जिससे अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को आगाह फ़रमाया था। हज़रत उमारा रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ेमे में से एक शख़्स ने बताया कि अल्लाह की क़सम! जो बात आपने अभी बताई है कि अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बताया, तो यह जो बैठा हुआ शख़्स ज़ैद है, इसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आने से पहले बिल्कुल यही बात की थी। इस पर हज़रत उमारा रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़ैद को गरेबान से पकड़ लिया और अपने साथियों से कहने लगे कि ऐ अल्लाह के बन्दो! मेरे

ख़ेमे में एक साँप था और मैं उसको अपने ख़ेमे से बाहर निकालने से बे-ख़बर था। और ज़ैद को मुख़ातिब करके कहा कि आइंदा मेरा तुमसे कोई तअल्लुक नहीं। बज़ लोगों का ख़्याल है कि ज़ैद ने बाद में तौबा कर ली और बज़ का ख़्याल है कि इसी तरह शरारतों में मलव्स रहा और इसी हालत में मर गया।

(तारीख़ुल खमीस, जिल्द 3, पृष्ठ 18, ग़ज़वा तबूक, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 2009 ई.)

एक रिवायत में है कि जो सहाबी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बताए हुए मकाम से ऊँटनी तलाश करके लाए, वह हज़रत हारिस बिन ख़ज़्मा रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

(ओसोदुल ग़ाबा, जिल्द 1, पृष्ठ 603, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 2003 ई.)

इस सफ़र में ज़ादे राह, यानी राशन, खाने-पीने का सामान भी कम हो गया।

इसकी तफ्सील में लिखा है, जो हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, कि ग़ज़वा-ए तबूक के सफ़र में लोगों को सख़्त भूख लगी। उन्होंने कहा: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अगर आप हमें इजाज़त दें तो हम अपने पानी लाने वाले ऊँट ज़बह कर लें और हम खाएँ और चिकनाई इस्तेमाल करें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कर लो। काफी हालत ख़राब है भूख से। रावी कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को जब पता लगा तो वह आए और इस पर अर्ज़ की: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अगर आपने ऐसा किया तो सवारियाँ कम हो जाएँगी। हाँ! लोगों को अपना बाकी माँदा ज़ादे राह लाने का इरशाद फरमाइए और फिर उनके लिए उस पर बरकत के लिए दुआ कीजिए। बअईद नहीं कि अल्लाह तआला उसमें बरकत रख दे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हाँ! यह ठीक है। रावी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक चमड़े का दस्तरख़्वान मँगवाया और बिछा दिया और फिर सब के बाकी माँदा ज़ाद, यानी खाने के सामान मँगवाए। कोई मुट्ठी भर मकई लाया, कोई मुट्ठी भर खजूरें, कोई रोटी का टुकड़ा वग़ैरह लेकर आया, यहाँ तक कि उस दस्तरख़्वान पर उसमें से कुछ थोड़ा सा इकट्ठा हो गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस पर बरकत की दुआ फरमाई और फिर फ़रमाया कि अपने बरतनों में ले लो। उन्होंने बरतनों में उसको ले लिया, यहाँ तक कि लश्कर में कोई बरतन न छोड़ा मगर उसको भर लिया। फिर सब ने खाया और सैर हो गए और कुछ बच भी गया। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ और जो शख़्स बिना किसी शक के इन दोनों शहादतों के साथ ख़ुदा से मिलेगा, वह जन्नत से नहीं रोका जाएगा।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुद्दलील अला अन्न मन मात अलत्तौहीद..., हदीस 45 (27))

इस सफ़र में मुख़्तलिफ वाक़िआत का भी वर्णन मिलता है। उनमें एक वाक़िया दो अशख़ास की लड़ाई का भी है। हज़रत यअला बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया: मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ग़ज़वा-ए तबूक में शामिल हुआ। मेरा एक नौकर था, उसने एक आदमी से लड़ाई की और उन दोनों में से एक ने दूसरे के हाथ पर काटा। कहते थे कि जिसके हाथ पर काटा गया था, उसने अपने हाथ को काटने वाले के मुँह से खींचा तो उसने उसके सामने वाले दो दाँतों में से एक को उखाड़ दिया। इतनी मज़बूती से पकड़ा हुआ था कि निकल नहीं रहा था, जब उसने ज़ोर लगाया तो जो दाँत काट रहा था, जिसके मुँह में हाथ था, उसके दाँत उस खींचने की वजह से उखड़ गए। बहरहाल वह दोनों नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए। जिसका दाँत टूटा था, उसने दीत का मुतालबा किया कि उसने मेरा दाँत तोड़ा है, मुझे उसका मुआवज़ा दिया जाए। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उको साक़ित क़रार दिया। उन्होंने कहा: यह ग़लत है, यानी दीत का हक़दार क़रार नहीं दिया। और फ़रमाया: क्या वह अपने हाथ को तुम्हारे मुँह में छोड़ देता कि तुम उसको चबा डालते? गोया वह ऊँट के मुँह में है जो उसे चबा डालता है। यानी जिसका हाथ काटा जा रहा था, उसने अपने बचाव में जब हाथ खींचा तो उस वजह से दाँत टूटा है, तो कोई दीत नहीं है।

(सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वते तबूक व हिया ग़ज़वतुल उसरा, हदीस 4417, मुतरजिम जिल्द 9, पृष्ठ 299-300)(सुनन इब्ने माजा, किताबुद्दियात, बाब मन अ़ज़ा रजुलन फ़ा नज़अ यदहु फ़ा नदर सनायाहु, हदीस नंबर 2656)

अतः फैसला दीत का भी हक़ाएक और हालात के मुताबिक होता है। यूँही बग़ैर हक़ाएक देखे दीत नहीं दी जाती।

इसी तरह इस सफ़र के वाक़िआत में से बज़ और वाक़िआत भी हैं, मसलन हज़रत अबू हुमैद साइदी बयान करते हैं कि ग़ज़वा-ए तबूक में दुराने सफ़र जब आप वादी-ए कुरा में पहुँचे तो वहाँ खजूर का एक बाग़ था। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमाया: अन्दाज़ा लगाओ कितनी खजूर होगी? इस पर सब ने अन्दाज़ा लगाया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी दस 'वसक़' यानी करीब अठारह सौ किलो का अन्दाज़ा लगाया कि इतनी खजूर उसमें से उतरेगी। बाग़ में उसकी मालिक जो औरत थी, वह खड़ी थी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया: जब तुम इस बाग़ का फल उतारो तो वज़न याद रखना कि कितना था? रावी कहते हैं कि तबूक से वापसी पर जब हम उसी बाग़ के पास पहुँचे तो उस औरत से पूछा कि कितना फल उतरा था? तो उसने बअईनह वही बताया जो अनुमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लगाया था, यानी दस वसक़।

इसी तरह यह रावी बयान करते हैं कि जब हम तबूक में आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: होशियार रहना, आज रात सख़्त आँधी चलेगी और कोई भी शख़्स खड़ा न रहे और जिसके साथ ऊँट है, वह ऊँट के घुटने भी बाँध दे और अगर किसी को ज़रूरत के लिए बाहर जाना पड़े तो अकेला न जाए, बल्कि दो अफ़राद मिल कर जाएँ। मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को आँधी के तूफ़ान का अन्दाज़ा हो गया था या मुमकिन है अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बता दिया हो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम बयान करते हैं कि हमने तअमीले इरशाद में अपने ऊँटों को बाँध दिया और फिर उस रात बहुत ज़ोर की आँधी चली। एक शख़्स खड़ा था, तो आँधी ने उसको 'तय' क़बीले के पहाड़ों पर फेंक दिया।

(सहीहुल बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब ख़रसुत्तमर, हदीस 1481, मुतरजिम जिल्द 3, पृष्ठ 124, 125)(सहीह मुस्लिम, नूर फाउंडेशन, जिल्द 12, पृष्ठ 184) (अल-लौलौउल मक्नून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 489, दारुस्सलाम))

एक और रिवायत में है कि 'बनू साइदा' के दो शख़्सों ने इस हिदायत पर अमल नहीं किया। एक तनहा क़ज़ाए हाजत के लिए निकला और दूसरा अपने ऊँट की तलाश में अकेला निकल गया। जो क़ज़ाए हाजत के लिए गया था, उसको मरज़ 'ख़न्नाक' हो गया, जो गले की एक बीमारी है, और जो ऊँट की तलाश में निकला था, उसको तेज़ हवा ने उड़ाकर 'तय' के दोनों पहाड़ों के दरमियान जा फेंका। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उसकी इत्तिला हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या मैंने बग़ैर किसी को साथ लिए बाहर निकलने की मुमानिअत नहीं कर दी थी? उनमें से जो बीमार हो गए थे, उनके लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई तो वह अच्छे हो गए और दूसरे जो 'तय' के पहाड़ों में जा गिरे थे, उनको ख़ुद 'तय' क़बीला वाले बाद में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास मदीना में ले आए।

(तारीखुत तबरी, जिल्द 2, पृष्ठ 183, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 2012 ई.)

(फ़िरोज़ुल लुगात, पृष्ठ 596, फ़िरोज़ सन्ज़)

एक रिवायत में है कि आँधी के बाद जब लोगों ने सुबह की तो उनके पास पानी मौजूद न था। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत में अर्ज़ की, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई। अल्लाह तआला ने एक बादल भेजा, वह उन पर खूब बरसा, यहाँ तक कि उन्होंने अपनी मशकें भर लीं और अपनी ज़रूरत पूरी कर ली।

(अस-सीरतुन्नबविय्या लिब्ने हिशाम, पृष्ठ 819, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 2001 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुआ के नतीजे में सफ़रे तबूक के दौरान मोजिज़ाना तौर पर बारिश के एक और वाक़िए का वर्णन यूँ मिलता है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से यह कहा गया कि आप हमें ग़ज़वा-ए तबूक के बारे में कुछ बताइए, तो उन्होंने बताया कि हम सख़्त गर्मी के मौसम में तबूक की तरफ रवाना हुए।

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

हमने एक जगह पड़ाव किया। हमें प्यास लाहिक हो गई, यहाँ तक कि हमें यूँ महसूस हुआ जैसे हमारी गर्दनें कट जाएँगी, यहाँ तक कि यह आलम हो गया कि एक शख़्स पानी की तलाश में जाता और वह वापस न आता तो हम यह गुमान करते कि शायद वह मर गया है। एक शख़्स अपने ऊँट को क़ुर्बान करता, वह उसके मअदे से पानी निचोड़कर उसे पीता था और जो बाकी बच जाता, वह (गर्मी की हद्दत को कम करने के लिए) पेट पर डाल लेता, अपने पेट में जो भी उसने जगह रखी हुई थी। मेरा ख़्याल है यहाँ कंटेनर मुराद है, उसमें रख लेता था। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की: या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने आपकी दुआ में भलाई रखी है, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे लिए दुआ कीजिए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तलब फ़रमाया: क्या तुम यह चाहते हो कि मैं इसके लिए दुआ करूँ? उन्होंने अर्ज़ की: जी हाँ! तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों हाथ बुलन्द कर लिए। अभी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ वापस नहीं आए थे कि बादल ने साया कर दिया और बारिश शुरू हो गई। लोगों ने अपने पास मौजूद सब चीज़ें भर लीं। फिर उसके बाद हमने इस बात का जाइज़ा लिया तो लश्कर से आगे कहीं बारिश नहीं हुई थी।

(अल-लौलौउल मक्नून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 490, दारुस्सलाम)(सहीह इब्ने हिब्बान, किताबुत्तहारत, बाब ज़िक्रिल ख़बरिद्दाल अला अन्न फरस मा युक़ल लह्मुहु ग़ैर नजिस, हदीस 1383, दारुल मआरिफ़ा, बैरूत)

इसी तरह तबूक के चश्मे में पानी बढ़ जाने के मोजिज़े का भी वर्णन मिलता है।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ग़ज़वा-ए तबूक के साल निकले। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ें जमा करते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़ुहर-अस्र और मगरिब-इशा अकट्ठी अदा फरमाते। एक रोज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ में कुछ ताख़ीर फरमाई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ लाए और ज़ुहर व अस्र की नमाज़ें जमा कीं। फिर अन्दर तशरीफ ले गए। उसके बाद बाहर तशरीफ लाए और मगरिब व इशा की नमाज़ें अकट्ठी अदा कीं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कल तुम इनशा अल्लाह तबूक के चश्मे पर पहुँचोगे और जब तक खूब दिन न निकल आए, तुम उस तक नहीं पहुँचोगे। पस तुममें से जो उसके पास पहुँचे, उसके पानी को बिल्कुल न छुए, जब तक कि मैं न आ जाऊँ। वहाँ एक चश्मा था, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब तक मैं न आ जाऊँ, इस पानी से कुछ नहीं लेना। रावी कहते हैं, फिर हम उस चश्मे पर पहुँचे, लेकिन दो आदमी हमसे पहले वहाँ पहुँच चुके थे और चश्मे से थोड़ा-थोड़ा पानी बह रहा था। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन दोनों से पूछा: क्या तुमने इसके पानी को छुआ है? उन दोनों ने कहा: जी हाँ। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन दोनों को तनबीह फरमाई और जो अल्लाह ने चाहा, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको कहा। रावी कहते हैं कि फिर लोगों ने उस चश्मे से अपने हाथों के ज़रिए थोड़ा-थोड़ा करके पानी निकाला, यहाँ तक कि एक बरतन में कुछ पानी जमा हो गया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसमें अपने दोनों हाथ धोए और चेहरा धोया। फिर उस पानी को उस चश्मे में वापस डाल दिया, तो चश्मा तेज़ी से बहने लगा, यहाँ तक कि लोग खूब सैराब हो गए। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को मुख़ातिब होकर फ़रमाया:

ऐ मुआज़! अगर तेरी उम्र लंबी हुई तो तू देख लेगा कि यह जगह बाग़ों से भर गई है।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल फज़ाइल, बाब फी मोजिज़ातिन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हदीस 4215, मुतरजिम नूर फाउंडेशन, जिल्द 12, पृष्ठ 184, 185)

मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़रकानी ने इस हदीस की शर्ह बयान करते हुए यह लिखा है कि यह ग़ैब की ख़बर थी जो पूरी हो चुकी है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु का जो ख़ास तौर पर तज़किरा फ़रमाया, तो उसमें भी कोई ग़ैब की ख़बर ही थी, क्योंकि इलाही तक़दीर थी कि बाद में हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु इसी इलाक़े, यानी शाम की तरफ आ गए थे और यहीं उनकी वफात हुई थी। मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वह्यी के माध्यम से मालूम हो गया होगा कि हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु यह जगह देखेंगे और वह वादी दरख़्तों और बाग़ात का मजमूआ बन जाएगी।

इब्ने वद्दाह, यानी अबू अब्दिल्लाह मुहम्मद इब्ने वद्दाह, जिनका अर्साए ज़िंदगी 199 हिजरी से 287 हिजरी है, यह अन्दलुस के मशहूर मुहद्दिस गुज़रे हैं, कहते हैं कि मैंने उस चश्मे के इर्द-गिर्द वह सारी जगह देखी है। दरख़्तों की सरसब्ज़ी और शादाबी इस कदर थी कि शायद यह सिलसिला क़यामत तक जारी रहे और ऐसी ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी थी।

(शर्हुज़्ज़रकानी अलल मुवत्ता, जिल्द 1, पृष्ठ 436, दार इहयातित्तुरासिल अरबी, बैरूत 1997 ई.) (सियरु आलामिन्नुबला, जुज़ 10, पृष्ठ 469, दारुल हदीस, काहिरा 2006 ई.))

अटलस सीरते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में तबूक के इस चश्मे की मज़ीद तफ्सील यूँ दर्ज है कि तबूक के मुहकमा शरीअ के रईस शैख़ सालेह ने बताया कि यह चश्मा दो साल पहले तक पौने चौदह सौ साल से मुसलसल उबलता रहा। यह उस वक़्त का वाक़िया है और बाद में जब नशीबी इलाक़ों में ट्यूबवेल खोदे गए तो इस चश्मे का पानी उन ट्यूबवेल्ज़ की तरफ मुंतकिल हो गया। तक़रीबन पच्चीस ट्यूबवेल्ज़ में तक़सीम हो जाने के बाद अब यह चश्मा ख़ुश्क हो गया है। उसके बाद शैख़ सालेह हमें एक ट्यूबवेल की तरफ भी ले गए, जहाँ हमने देखा कि चार इंच का एक पाइप लगा हुआ है और किसी मशीन के बग़ैर उससे पानी पूरे ज़ोर से निकल रहा है। करीब-करीब यही कैफ़ियत दूसरे ट्यूबवेल्ज़ की भी हमें बताई गई।

यह नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मोजिज़े ही की बरकत है कि आज तबूक में इस कसरत से पानी मौजूद है कि मदीना और ख़ैबर के सिवा हमें कहीं इतना पानी देखने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ, बल्कि हक़ीकत यह है कि तबूक का पानी उन दोनों जगहों से भी ज़्यादा है। इस पानी से फ़ायदा उठाकर अब तबूक में हर तरफ बाग़ लगाए जा रहे हैं और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक तबूक का इलाक़ा बाग़ों से भरा हुआ है और दिन-ब-दिन भरता जा रहा है।

(अटलस सीरते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, अज़ डॉ. शौक़ी अबू ख़लील, मुतरजिम, पृष्ठ 431, दारुस्सलाम)

ग़ज़वा-ए तबूक में पहरे दारी की ज़िम्मेदारी के बारे में भी लिखा हुआ है कि ग़ज़वा-ए तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हिफ़ाज़ते ख़ास पर हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु को मामूर फ़रमाया। वह अपने साथियों के साथ लश्कर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते थे। एक दिन वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास हाज़िर हुए और अर्ज़ की: या रसूलुल्लाह! हम अपने पीछे सुबह होने तक तकबीर की आवाज़ सुनते हैं। क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हममें से किसी और को हिफ़ाज़त के लिए चक्कर लगाने का इरशाद फ़रमाया है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मैंने ऐसा नहीं किया, लेकिन शायद बज़ मुसलमान रज़ाकाराना तौर पर यह काम सरअंजाम दे रहे हों। जिस पर हज़रत सिलकान बिन सलामा रज़ियल्लाहु अन्हु, जिनकी ड्यूटी नहीं लगाई गई थी, लेकिन मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में अज़-ख़ुद यह काम कर रहे थे, उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मैं अपने दस घुड़सवार मुसलमानों के साथ निकलता हूँ और उन ड्यूटी वालों की हिफ़ाज़त करता हूँ। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ देते हुए फ़रमाया

अल्लाह तआला राहे ख़ुदा में हिफ़ाज़त करने वालों की हिफ़ाज़त करने वालों पर रहम करे। लोगों में से या जानवरों में से तुमने जिस-जिस की हिफ़ाज़त की है, उनमें से हर जान और जानवर के बदले तुम्हें एक-एक क़ीरात अज्र मिलेगा।

एक क़ीरात जो है, यह तक़रीबन दो ग्राम वज़न का सोना वग़ैरह है।

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 5, पृष्ठ 453, वर्णन मनिस्तअमलहु सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अलल हर्स बितबूक, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 1993 ई.)(औज़ाने शरईय्या, अज़ मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब, पृष्ठ 40, इदारतुल मआरिफ, कराची व इंटरनेट)

एक रिवायत में है कि तबूक के सफ़र के दौरान लोगों का यह हाल था कि हर पड़ाव के दौरान कुछ लोग पीछे रह जाते थे। सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ करते कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आज फलाँ पीछे रह गया है, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फरमाते: तुम उसे छोड़ो, अगर उसमें कुछ भलाई होगी तो ख़ुदा उसे तुमसे मिला देगा और अगर उसके सिवा कोई बात हुई तो अल्लाह तआला तुम्हें उससे छुटकारा दिला देगा। इसी असना में किसी ने कहा: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु पीछे रह गए हैं और उनका ऊँट सुस्त हो गया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम उसे छोड़ो, अगर उसमें कुछ भलाई होगी तो ख़ुदा उसे तुमसे मिला देगा और अगर उसमें उसके सिवा कोई बात हुई तो अल्लाह तआला तुम्हें उससे छुटकारा दिला देगा। उनकी सूरतेहाल यह थी कि उनको ऊँट ने ज़्यादा तंग किया हुआ था, वह बिल्कुल सुस्त हो गया था। जब हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु का ऊँट बिल्कुल सुस्त और कमज़ोर हो गया तो वह उस पर से उतर गए और अपना सामान

अपनी कमर पर उठा लिया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे-पीछे पैदल रवाना हो गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ मंज़िलों के बाद एक जगह पड़ाव किया तो मुसलमानों में से एक देखने वाले ने देखा और कहा: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! रास्ते पर कोई एक शख़्स अकेला चला आ रहा है। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'कुन अबा ज़र्र'। काश! यह अबू ज़र हो। फिर जब लोगों ने ग़ौर से देख लिया तो उन्होंने कहा: या रसूलुल्लाह! बख़ुदा! यह अबू ज़र ही हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह तआला अबू ज़र पर रहम फ़रमाए, वह अकेला ही चला है, अकेला ही फौत होगा और अकेला ही उठाया जाएगा।

(अस-सीरतुन्नबविय्या लिब्ने हिशाम, पृष्ठ 819-820, ग़ज़वते तबूक, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 2001 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के मुतअल्लिक अकेले होने के बारे में जो यह फ़रमाया था, वह हज़रत उस्मान रदियल्लाहु तआला अन्हु के अहदे खिलाफत में हर्फ बहर्फ पूरा हुआ, जब यह अपने अहले खाना समेत मदीना से बाहर 'रबज़ा' में मुक़ाम हो गए। 'रबज़ा' मदीना से तीन दिन की मुसाफ़त पर, तक़रीबन छियानवे मील के फासिले पर एक मकाम है। उनके साथ उनके बीवी-बच्चे और एक ग़ुलाम था। उस वक़्त यहाँ कोई और बस्ती वग़ैरह न थी। उनकी वफात का वक़्त करीब आया तो उनकी बीवी तन्हाई की वजह से परेशान हुईं और कफ़न वग़ैरह भी न था, जिस पर वह रोने लगीं, तो हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा कि मत रो। फिर फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुना था कि तुममें से एक आदमी बियाबान में फौत होगा, जिस की नमाज़े जनाज़ा में अहले ईमान की एक जमाअत शरीक होगी। और साथ ही अपनी बीवी से यह कहा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब यह बात कही थी, तो जितने लोग उस वक़्त वहाँ मौजूद थे, वह सब फौत हो चुके हैं और कोई भी जंगल-बियाबान में अकेला फौत नहीं हुआ, सिर्फ मैं ही वह शख़्स हूँ। तुम परेशान न हो। जब मैं फौत हो जाऊँ तो ग़ुस्ल देकर मेरे पार्थिव शरीर को मदीना की तरफ जाने वाले रास्ते पर रख देना। इसलिए उन्होंने ऐसा ही किया और अभी थोड़ी ही दर गज़री थी कि वहाँ से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साथियों समेत गुज़र रहे थे। वह इराक़ से उमरे की नियत से जा रहे थे। उन्हें जब इल्म हुआ कि यह हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा है, तो उनकी आँखों में आँसू आ गए और रोते हुए कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सच फ़रमाया था कि अबू ज़र अकेला ही चलता है, वह अकेला ही फौत होगा।

फिर उन्होंने अपने साथियों समेत उनका जनाज़ा पढ़ा और उन्हें वहीं दफन किया और फिर अपने साथियों को जंगे तबूक के हवाले से हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के मुतअल्लिक सारा वाक़िया बयान किया और बताया कि किस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात पूरी हुई।

(मुसनदे अहमद बिन हनबल, जिल्द 7, पृष्ठ 170, रिवायत 21700, 21701, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत)(अस-सीरतुल हलबिय्या, जिल्द 3, पृष्ठ 190-191, ग़ज़वा तबूक, दारुल कुतुबिल इल्मिया 2002 ई.) (अंसाबुल अशराफ लिल बलाज़री, जुज़ 9, पृष्ठ 443, दारुल फिक्र 1996 ई.) (अल-लौलौउल मक्नून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 483-484, दारुस्सलाम) (दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 487-488, बज़्मे इक़बाल लाहौर) (फरहंगे सीरत, पृष्ठ 130, 226, ज़वार एकेडमी पब्लीकेशन्स, कराची 2003 ई.))

एक वाक़िया हज़रत वासिला बिन अस्क़अ रदियल्लाहु तआला अन्हु का लश्कर के साथ मिलने का भी है। यह ग़ज़वा-ए तबूक से कुछ दिन पहले मदीना आ कर मुसलमान हुए थे। अभी यह मदीना में ही थे कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तबूक के लिए तैयारी का एलान फ़रमाया।

(ओसोदुल ग़ाबा, जिल्द 5, पृष्ठ 399, 'वासिला बिन अस्क़अ', दारुल कुतुबिल इल्मिया 2003 ई.)(अल-लौलौउल मक्नून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 532, दारुस्सलाम)

हज़रत वासिला बिन अस्क़अ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जंगे तबूक के मौक़े पर मुनादी कराई। मैं अपने घर गया और वहाँ से वापस आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अस्हाब रज़ियल्लाहु अन्हुम पहले ही रवाना हो चुके थे। मैंने शहर में पुकारना शुरू किया कि क्या कोई ऐसा शख़्स है जो अपने साथ एक आदमी को सवार कराए और ग़नीमत में जो हिस्सा मिले, वह बदले में ले ले? एक बूढ़े अन्सारी ने कहा: अच्छा, तो हम उसका हिस्सा ले लेंगे और उसको अपने साथ सवार कराएँगे और अपने साथ खिलाएँ-पिलाएँगे। मैंने कहा: हाँ! मुझे यह शर्त मंज़ूर है और बताया कि मैं ही वह शख़्स हूँ। तो उस बूढ़े ने कहा: अच्छा, तो फिर अल्लाह की बरकत के भरोसे चलो। हज़रत वासिला कहते हैं कि पस मैं बहुत अच्छे साथी के साथ निकला, यहाँ तक कि अल्लाह ने हम को ग़नीमत का माल अता फ़रमाया। मेरे हिस्से में कुछ तेज़-रफ़्तार ऊँटनियाँ आईं। मैं उनको हँकाकर अपने साथी के पास लाया। वह निकला और अपने ऊँट पर पिछली तरफ बैठा। फिर कहा: इनको मेरी तरफ पीठ करके चलाओ। फिर कहा: इनको मेरी तरफ रुख करके चलाओ। उसके बाद कहा: मेरे नज़दीक तेरी ऊँटनियाँ बहुत उम्दा हैं। मैंने कहा: यह तो तुम्हारा माल है, जिस की मैंने शर्त की थी। उसने कहा: ऐ भतीजे! यह तेरा हिस्सा है, तुम ही रखो। मेरा मक़सद तो यह हिस्सा लेना नहीं था।

(सुनन अबी दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फिर्रजुल युक्री दाबतहु अलन्निस्फ..., हदीस 2676)

बहरहाल इस बहाने जंग में शामिल हो गया।

इसी तरह हज़रत अबू ख़ैसमा रज़ियल्लाहु अन्हु का लश्कर के साथ मिलने का वाक़िया भी मिलता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस काफिले से पीछे रह जाने वालों में से एक सहाबी हज़रत अबू ख़ैसमा रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। मालूम होता है कि उन दिनों यह मदीना में नहीं थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तबूक के सफ़र पर रवाना होने के कुछ दिन बाद यह मदीना में अपने घर एक सख़्त गर्म दिन में पहुँचे। उन्होंने देखा कि उनकी दोनों बीवियों ने बाग़ में अपने-अपने छप्पर पर पानी छिड़का हुआ था और उनके लिए पानी ठंडा किया हुआ था और उनके लिए खाना तैयार किया हुआ था।

हज़रत अबू ख़ैसमा छप्पर के दरवाज़े पर खड़े हुए और उनकी बीवियों ने जो उनके लिए इंतज़ाम किया हुआ था, वह देखा तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो सख़्त चिलचिलाती धूप, सख़्त गर्मी और लू के सफ़र में हैं और अबू ख़ैसमा ठंडे सायों में, उम्दा खानों और ख़ूबसूरत बीवियों और अपने माल-मवेशियों में मक़ाम कर रहे हैं। यह हरगिज़ इंसाफ नहीं है। फिर उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं तुम में से किसी के पास भी नहीं आऊँगा, यहाँ तक कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुँच जाऊँ।

पस तुम दोनों मेरे लिए सामाने सफ़र तैयार करो। इसलिए उन दोनों ने ऐसा ही किया। फिर अबू ख़ैसमा ऊँट पर सवार हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे रवाना हो गए और एक दोपहर सख़्त गर्मी और लू में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दूर सराब में एक सवार आता हुआ दिखाई दिया। इब्ने हिशाम की रिवायत के मुताबिक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तबूक पहुँच चुके थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'कुन अबा ख़ैसमा'। कि काश! यह अबू ख़ैसमा हो। जब वह करीब आए तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! ख़ुदा की क़सम! वह अबू ख़ैसमा अन्सारी ही हैं। वह अपने ऊँट को बिठाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और सलाम अर्ज़ किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे तलब फ़रमाया कि ऐ अबू ख़ैसमा! तुम क्यों पीछे रह गए थे? तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सारी बात बताई। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके लिए ख़ैर की दुआ फरमाई।

(अस-सीरतुन्नबविय्या लिब्ने हिशाम, पृष्ठ 817-818, ग़ज़वते तबूक, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 2001 ई.)(ओसोदुल ग़ाबा, जिल्द 6, पृष्ठ 89, 'अबू ख़ैसमा अन्सारी', दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत 1971 ई.)

हज़रत मुस्लिह मौऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इस वाक़िए का भी वर्णन किया है। लिखते हैं कि

"तारीख में आता है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तबूक को रवाना हो गए तो बज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पीछे रह गए। उनमें से एक अबू ख़ैसमा भी थे। यह बहुत नेक थे। उनका ख़्याल भी न था कि पीछे रहें, मगर जब जंग के लिए बाहर निकलने का हुक्म हुआ तो उस वक़्त वह घर पर मौजूद न थे। जब वह घर आए तो उन्होंने देखा कि उनकी बीवी उनके इंतज़ार में बैठी है, जैसे कोई बातें करने की ख़्वाहिश रखता हो। उन्होंने बीवी की इस ख़्वाहिश को नज़र अन्दाज़ करते हुए बीवी से पूछा कि क्या रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ ले गए हैं? उनकी बीवी ने कहा कि ज़रा बैठ तो जाओ। उन्होंने जवाब दिया कि ख़ुदा का रसूल तो जंग के लिए रवाना हो जाए और मैं घर में आराम करूँ? अबू ख़ैसमा से ऐसा नहीं हो सकता। और इसी वक़्त निकल कर घोड़े को तैयार किया और उस पर सवार होकर उस

रास्ते पर चल पड़े।"

हज़रत मुस्लिह मौऊदरज़ियल्लाहु अन्हुने यहाँ घोड़े का वर्णन किया है। पहली रिवायतों में बज़ जगह ऊँट का वर्णन है या ग़लती से घोड़े का वर्णन है। बहरहाल हो सकता है दोनों रिवायतें मिलती हों। बहरहाल सवारी थी, जिस पर रवाना हो गए। उस रास्ते पर चल पड़े "जिस पर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ ले गए थे। आख़िर मारा-मारा सफ़र करके कई मंज़िलों के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल हो गए। जब यह लश्कर के करीब पहुँचे तो बज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने दूर से गर्द उठती हुई देखी और ख़्याल दौड़ाने लगे कि यह कौन आ रहा है। उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'कुन अबा ख़ैसमा'। अबू ख़ैसमा हो जा। अब इस फक़रे का यह मतलब तो हो नहीं सकता कि आने वाला कोई भी हो, वह अबू ख़ैसमा बन जाए। पस उसके मानी यही हैं कि मेरी ख़्वाहिश है कि आने वाला अबू ख़ैसमा हो।"

(तफ्सीर कबीर, जिल्द 4, पृष्ठ 168-169, मतबूआ 2004 ई., कादियान)

'कुन' की वज़ाहत करते हुए एक और जगह हज़रत मुस्लिह मौऊदरज़ियल्लाहु अन्हुने लिखा है। पहला हवाला तफ्सीर कबीर का था। यहाँ भी हवाला उसी तफ्सीर का ही है। हज़रत मुस्लिह मौऊदरज़ियल्लाहु अन्हुने 'कुन' की वज़ाहत करते हुए लिखा कि

"याद रहे कि 'कुन' का लफ़्ज़ अरबी ज़बान में किसी को कहने के लिए भी बोला जाता है और महज़ इज़हारे ख़्वाहिश के लिए भी बोला जाता है। इसलिए रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब शाम की तरफ लश्करकशी की तो अबू ख़ैसमा रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी थे, जिन पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बड़ा एतेमाद था और आप उनसे बड़ी मुहब्बत रखते थे और आप समझते थे कि अपने फर्ज के अदा करने में यह शख़्स ग़फ़लत से काम नहीं ले सकता। लेकिन जब आप लश्कर के साथ शहर से कुछ फासिले पर जा पहुँचे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का जाइज़ा लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अबू ख़ैसमा रज़ियल्लाहु अन्हु नज़र न आए, जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बहुत अफ़सोस हुआ कि मुझे उस पर इतनी हुस्ने ज़न्नी थी और वह इस जिहाद से पीछे रह गया है। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चले तो किसी ने कहा: हुज़ूर! कोई शख़्स पीछे से आ रहा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस तरफ देखा और फ़रमाया: 'कुन अबा ख़ैसमा'। जब गर्द हटी और वह शख़्स करीब पहुँचा तो लोगों ने देखा कि वह अबू ख़ैसमा रज़ियल्लाहु अन्हु ही था। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला की तारीफ की कि उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़्वाहिश को इतनी जल्दी पूरा फरमा दिया। अब 'कुन अबा ख़ैसमा' के यह मानी नहीं थे कि आ तो कोई और रहा था, मगर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह अबू ख़ैसमा बन जाए, बल्कि 'कुन अबा ख़ैसमा' के यह मानी थे कि ख़ुदा करे कि यह आने वाला शख़्स अबू ख़ैसमा ही हो। तो अरबी ज़बान में यह एक मुहावरा है कि बज़ दफ़ा ख़्वाहिश के इज़हार के लिए भी 'कुन' का लफ़्ज़ बोल लिया जाता है।" (तफ्सीर कबीर, जिल्द 5, पृष्ठ 250, मतबूआ 2004 ई., कादियान)

जिस आयत की तफ्सीर आपरज़ियल्लाहु अन्हुने बयान की है, वह तो मैंने नहीं पढ़ी, लेकिन बहरहाल यह 'कुन' के लफ़्ज की वज़ाहत कर दी है। बाकी इनशा अल्लाह आइंदा बयान करूँगा।

रबवा की मस्जिद पर हमले का जो वाक़िया हुआ है, उसमें जो ज़ख़्मी हुए थे, उनके लिए दुआ करें। अल्लाह तआला ज़ख़्मियों को अपनी हिफ़ाज़त में रखे और जल्द शिफाए कामिल अता फ़रमाए। पाकिस्तान में मुख़ालिफ़ीन के हर मंसूबे को अल्लाह तआला नाकाम-ओ-नामुराद करे। रबवा में आज ख़ातमे नबूवत के नाम पर जलसा भी हो रहा है और मौलवियों ने जो गन्द और ग़लाज़त बोलनी थी, बोल रहे हैं, बल्कि बोल चुके हैं। पता नहीं अब तो जलसा ख़त्म भी हो चुका होगा। अल्लाह तआला उनके शर से महफ़ूज़ रखे।

इसी तरह बंगलादेश के अहमदियों के लिए भी दुआ करें। वहाँ भी मुख़ालिफ़ीन के बड़े बद इरादे लगते हैं। अल्लाह तआला वहाँ भी हर अहमदी को महफ़ूज़ रखे।

फिलिस्तीनियों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उन पर रहम फ़रमाए और ज़ालिमों से नजात दे। जंगबन्दी जो कही जाती है, वह तो सिर्फ नाम की है। गुज़िश्ता दो दिनों में जो वाक़िआत हुए हैं, उन्होंने साबित कर दिया है कि यह सिर्फ नाम की जंगबन्दी थी। अल्लाह तआला उन मज़लूमों को ज़ुल्म से बचाए और ज़ालिमों की पकड़ करे।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनैशनल, 21 नवम्बर 2025, पृष्ठ 2 से 7)

पृष्ठ 1 का शेष

'मुवाफ़िकुल हक़' कलाम को भी हिकमत कहते हैं। इन मानी की रू से आयत का मतलब यह होगा कि ऐसी बात करो जो सच्ची और वाक़यात के मुताबिक़ हो। कुछ लोग यह समझ कर कि हम सच्चे दीन की तरफ ही बुला रहे हैं, कुछ ग़लत बातों को भी बयान कर देते हैं। फ़रमाया कि यह तरीक़ा ग़लत है। दुश्मन के मुक़ाबले में जो बात कहो, सच्ची कहो। दूसरों को हिदायत देते-देते ख़ुद ही गुमराह न हो जाओ। जैसे कि फ़रमाया:"لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ" (अल-मायदा: 106) अगर तुम हिदायत पर क़ायम रहते हो तो उसकी परवाह न करो कि दूसरा गुमराह होता है। यानी कोई ऐसी बात जो गुनाह हो, इस ख़्याल से न करो कि इसके ज़रिए मैं दूसरे को हिदायत दूँगा। जब तुम्हारी हिदायत और दूसरे की हिदायत टकरा जाए तो उस वक़्त तुम अपनी हिदायत की फ़िक्र करो और दूसरे की हिदायत को ख़ुदा पर छोड़ दो। क्योंकि अल्लाह तआला यह पसंद नहीं करता कि मोमिन काफ़िर हो जाए और काफ़िर हो जाए और काफ़िर मोमिन। वह तो दूसरों को हिदायत देना चाहता है।

हिकमत मौक़ा और मकाम के मुनासिब कलाम को भी कहते हैं। इन मानी की रू से आयत का मतलब यह होगा कि तबलीग़ में बरमौक़ा बात करनी चाहिए। अगर कुछ दलीलों से दुश्मन के भड़कने का इंदेशा हो और ख़तरा हो कि वह इस तरह से तुम्हारी बात नहीं सुनेगा, तो यह मुनासिब नहीं कि बिना वजह उसे चिढ़ाओ। तुम उसके सामने दूसरी दलीलें बयान करो जिन्हें वह ठंडे दिल से सुन सके। गोया बात करते वक़्त पहले मिज़ाज शिनासी कर लो। अगर तुम उन्हें ख़्वाह-म-ख़्वाह भड़काओगे तो कोई फ़ायदा न होगा।

अल्लाह अल्लाह! क्या मुख्तसर अल्फ़ाज़ में तबलीग़ के सब गुर बयान कर दिए हैं। जो शख़्स भी इन पर अमल करेगा, कभी अपने मक़सद में नाकाम नहीं रहेगा।

'अल-मौइज़तुल हसना' (उपदेश अच्छा) के मानी पहले गुज़र चुके हैं (यानी वह कलाम जो दिलों को नर्म कर दे और उन पर गहरा असर डाले)। इस नसीहत से मुसलमानों को इस तरफ तवज्जोह दिलाई कि ख़ुश्क दलीलों ही से काम न चलाया करो, बल्कि जज़्बात को उभारने वाली बात भी करो। और हिकमत के साथ मौइज़तुल हसना को भी शामिल रखो। 'हसना' का लफ़्ज़ रखकर बता दिया कि झूठी ग़ैरतें न दिलाओ, जैसा कि आजकल के जाहिल उलमा लोगों को बिना वजह रास्तबाज़ों के ख़िलाफ भड़काते हैं।

'جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ' कहने से मुराद 'جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ' कहकर यह बताया है कि उनसे झगड़ा करते वक़्त यह भी मद्देनज़र रखो कि मुख़्तलिफ दलीलों में से जो सबसे अलिया और मज़बूत दलील हो, उसे बुनियाद और मर्कज़ के तौर पर क़ायम करो और बाकी दलीलों को उसका ताबे। क्योंकि ताइदी दलील के टूट जाने से अस्ल दलील को कोई ज़ौफ़ (कमज़ोरी) नहीं पहुँचती, बरख़िलाफ़ इसके कि अगर मर्कज़ी नुक्ता कमज़ोर हो तो मज़बूत ताइदी दलीलें भी कोई ज़्यादा फ़ायदा नहीं देतीं। 'اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ' में बतलाया है कि तुम अच्छी तरह से तबलीग़ करते रहो, लेकिन अगर लोग न मानें तो इससे यह नतीजा निकालकर मायूस न हो जाना कि हमें तबलीग़ करनी ही नहीं आती। क्योंकि बहुत मुमकिन है कि तुम्हारी तबलीग़ में कोई नुक़्स न हो, मगर मुख़ातिब के दिल पर उसके गुनाहों का ऐसा रंग हो कि ख़ुदा तआला उसके लिए हिदायत की खिड़की न खोले। ग़रज़ तबलीग़ में मुन्हमिक रहना चाहिए, नतीजा निकालना और असर पैदा करना ख़ुदा तआला का काम है।

(तफ्सीर कबीर, जिल्द चहारम, पृष्ठ 272) ★ ★ ★

अख़बार बदर ख़ुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फ़रमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुज़ुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हुज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दु के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें।

(प्रबंधक)

★ ★ ★

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बरकतों की हामिल सिंगापुर व ऑस्ट्रेलिया 2013 ई. की यात्रा

(भाग -1)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, म्यांमार (बर्मा) और श्रीलंका की राष्ट्रीय कार्यकारी समितियों के सदस्यों के साथ बैठक

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बैठक में जमाअत की प्रगति और सदस्यों के शिक्षण व प्रशिक्षण के संबंध में महत्वपूर्ण निर्देश

सिंगापुर से ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रस्थान। ऑस्ट्रेलिया में शुभ आगमन और जोरदार स्वागत।

ऑस्ट्रेलिया सरकार की ओर से एक संसद सदस्य ने हवाई अड्डे पर हुज़ूर अनवर का स्वागत किया।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाक़ातें। सैकड़ों जमाअत सदस्यों ने अपने प्यारे आक़ा से व्यक्तिगत भेंट का सौभाग्य प्राप्त किया।

'डेली टेलीग्राफ', 'दी स्टैंडर्ड' और 'ब्लैक टाउन सन' के अख़बारी प्रतिनिधियों का हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़से साक्षात्कार। 'डेली टेलीग्राफ' में हुज़ूर अनवर के साक्षात्कार का प्रकाशन।

जलसा सालाना के प्रबंधों का निरीक्षण और सम्मेलन में कर्तव्य दे रहे कार्यकर्ताओं को महत्वपूर्ण सलाह

जुमा के संदेश से ऑस्ट्रेलिया वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन। राष्ट्रीय रेडियो और राष्ट्रीय टीवी एबीसी के प्रतिनिधियों का हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़से साक्षात्कार।

30 सितम्बर, सोमवार 2013 ई. (भाग दो)

सिंगापुर, मलेशिया, फिलीपींस, थाईलैंड, म्यांमार (बर्मा) और श्रीलंका की जमाओं की राष्ट्रीय कार्यकारी समितियों के सदस्यों के साथ हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़तआला की बैठक

बाद में कार्यक्रम के अनुसार राष्ट्रीय कार्यकारी समिति सिंगापुर, राष्ट्रीय कार्यकारी समिति मलेशिया और फिलीपींस, थाईलैंड, बर्मा और श्रीलंका की राष्ट्रीय कार्यकारी समितियों के जो सदस्य इस अवसर पर उपस्थित थे, उनकी हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़के साथ बैठक शुरू हुई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और दुआ के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष मलेशिया से जमाअती हालात के बारे में पूछा। अध्यक्ष महोदय ने बताया कि कुछ जगह हालात बेहतर हैं और कुछ जगह अच्छे नहीं हैं। कुआला लुम्पुर में जमाअत का जो केंद्र है वह आवासीय हिस्से में है इसलिए नमाज़ केंद्र के रूप में उसे इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। एक अलग जगह लेकर वहाँ नियमित नमाज़ पढ़ी जाती है।

...हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने राष्ट्रीय अध्यक्ष मलेशिया को निर्देश दिया कि अपने जनसंपर्क बढ़ाएँ और देश के हर राज्य में बढ़ाएँ, हर तरफ बढ़ाएँ, सरकारी अधिकारियों से, आधिकारिक लोगों से और सिविल अधिकारियों से भी अपने संबंध और संपर्क बढ़ाएँ। और कोई रास्ता ऐसा निकालें कि इन हालात से जल्द बाहर निकलें। युवाओं की एक टीम बनाएँ जो बहुत अधिक मेहनत और कोशिश से अपने संबंध और संपर्क स्थापित करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा कि मलेशिया में भी हमारे युवा हर क्षेत्र में होने चाहिए। सरकारी सेवा विभिन्न विभागों और सिविल सेवा में भी हों। हर क्षेत्र में जाएँ, हर विभाग में हमारी उपस्थिति होनी चाहिए। शिक्षा सचिव से कहें कि नियमित रूप से छात्रों की काउंसलिंग करें और उन्हें मार्गदर्शन करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अध्यक्ष सिंगापुर को संबोधित करते हुए कहा कि आपके लिए भी यही निर्देश है।

...वसीयत सचिव मलेशिया ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि 305 कमाने वालों में से इस समय 191 वसीयत करने वाले हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा आपने तो अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

...प्रचार सचिव मलेशिया ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस साल हमारे 78 प्रतिज्ञापत्र हुए हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा इन सबके साथ अपना संपर्क और संबंध बनाए रखें।

...प्रचार सचिव सिंगापुर ने बताया कि उनके इस साल के प्रतिज्ञापत्रों की संख्या पाँच है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा इनसे मजबूत संपर्क रखें और अपने सिस्टम का हिस्सा बनाएँ। लोग प्रतिज्ञापत्र करते हैं फिर संपर्क न होने के कारण पीछे हट जाते हैं। इन सबका प्रशिक्षण होना चाहिए और स्थायी संबंध बना रहना चाहिए। प्रचारक का इन लोगों के साथ व्यक्तिगत संपर्क होना चाहिए।

...शिक्षा सचिव सिंगापुर ने बताया कि हमारे दस के करीब छात्र यूनिवर्सिटी जा रहे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा कि एक समिति बनाएँ जो माध्यमिक शिक्षा पूरी करने वाले छात्रों का मार्गदर्शन करे।

...थाईलैंड के अध्यक्ष जमाअत ने बताया कि इस साल उनके दो प्रतिज्ञापत्र हुए हैं। इनमें से एक से नियमित संपर्क है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: दूसरे से भी संपर्क रखें।

...म्यांमार (बर्मा) के प्रतिनिधि ने बताया कि उनके इस साल के चार प्रतिज्ञापत्र हुए हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश दिया कि सभी से संपर्क स्थापित रखें।

...हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: चंदा कोई कर नहीं है। जो दर व मानक से कम देना चाहता है वह नियमित अनुमति प्राप्त करे।

...हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश दिया कि राजनेताओं से संबंध बढ़ाएँ और ऐसा संपर्क रखें कि जब भी आवश्यकता हो तो वह आपके काम आएँ। यह जरूरी नहीं कि वह प्रतिज्ञापत्र भी करें। वह राजनेता हैं, दुनियादार आदमी होते हैं। उन्हें पुस्तक World Crisis And The Pathway To Peace दें। उनके विचार अहमदियत के बारे में बदल जाएँगे। इसी तरह पत्रकारों, नौकरशाहों से संपर्क करें और उन्हें भी यह पुस्तक दें।

...हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: मजलिस अंसारुल्लाह यूके ने चालीस हज़ार पुस्तकें वितरित की हैं। आप भी मुस्लिम विद्वानों और दूसरे विद्वानों जो मुसलमान नहीं हैं उन्हें यह पुस्तक दें। अगर मुल्लाओं से कोई संपर्क है तो उसे भी यह पुस्तक दें। यदि आप मलेशिया में पुनर्मुद्रण कर सकते हैं तो इसकी सॉफ्ट कॉपी ले लें।

...फिलीपींस की कार्यकारी समिति के सदस्य ने बताया कि फिलीपींस में नौ वसीयत करने वाले हैं। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़तआला ने कहा अपने चंदा देने वालों के अनुपात में वसीयत करने वालों की संख्या बढ़ाएँ।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने फिलीपींस के डॉक्टर अलीम साहिब को निर्देश दिया कि आप नियमित एक पत्र तैयार करके, पत्र का मसौदा तैयार करें और फिर साथ वहाँ के अधिकारियों को और चुने हुए

लोगों को पुस्तक "Pathway to Peace" भेजें।

एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: जहाँ जमाअतें छोटी हैं और प्रशिक्षित लोग नहीं हैं वहाँ नए प्रतिज्ञापत्र करने वालों को भी पद दिया जा सकता है। नए प्रतिज्ञापत्र करने वालों का प्रशिक्षण करें और उन्हें नियमित सिस्टम का हिस्सा बनाएँ।

...हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: यूके में एक अंग्रेज Jonathon Butterworth ने दो साल पहले प्रतिज्ञापत्र किया था। इस बार वह राष्ट्रीय कार्यकारी समिति में नए प्रतिज्ञापत्र करने वालों के लिए प्रशिक्षण सचिव चुना गया है और बहुत सक्रिय है और MTA पर उसके कार्यक्रम भी आते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: जो नए प्रतिज्ञापत्र करने वाले सक्रिय हैं उन्हें पद दिया जा सकता है और उनसे उनकी योग्यता के अनुसार काम लिया जा सकता है।

...राष्ट्रीय अध्यक्ष मलेशिया को निर्देश देते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा कि आप जिस तरीके से संदेश पहुँचाना चाहते हैं पहुँचाएँ। कार्यक्रम बनाएँ जरूरी नहीं कि पुराने तरीके पर ही चलें। अब नए रास्ते देखें। नई राहें तलाश करें और नए तरीके अपनाएँ। अपने कार्यक्रमों में युवा खुद्दाम को शामिल करें और उनसे काम लें। जो पुराने लोग हैं उनके अनुभवों से फायदा उठाएँ और योजना बनाने में उनसे मदद लें लेकिन आगे कार्यक्रम पर अमल युवाओं के द्वारा करवाएँ। अब तत्पर होकर काम करें।

...विदेश मामलों के सचिव सिंगापुर को निर्देश देते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा कि स्वागत समारोह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जो संबोधन दिया है उसे प्रिंट करें और फिर यह ब्रोशर चीनी लोगों को दें। दूसरों को भी दें। और समारोह में जो अतिथि शामिल हुए उन सभी से अब संपर्क स्थापित रखें और नियमित अनुवर्तन करें।

...MTA के लिए युवाओं को प्रशिक्षण देने के संदर्भ में अध्यक्ष सिंगापुर के अनुरोध पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा कि आप इस उद्देश्य के लिए एक दो ऐसे युवाओं का चयन करके उन्हें लंदन भेजें जिन्हें इसमें रुचि है। हम उन्हें वहाँ बुनियादी प्रशिक्षण देंगे जो एक महीने में पूरा हो जाएगा। इसी तरह तीन चार दिन का वार्षिक रिफ्रेशर कोर्स होता है उसमें भी किसी युवा को भेज दिया करें जो यहाँ MTA के लिए काम कर रहा हो और उसमें तकनीकी कौशल भी हो और उसे रुचि भी हो।

...फिलीपींस की कार्यकारी समिति के सदस्यों ने बताया कि हमारी वहाँ सात शाखाएँ हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा कि आप भी वहाँ बुद्धिमत्ता के साथ मुल्लाओं को प्रचार करें और अपने संपर्क स्थापित करें। प्रमुख अधिकारियों से भी अपने संबंध बनाएँ।

...कंबोडिया से आने वाले कार्यकारी समिति सदस्यों को संबोधित करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा कि जो मैं निर्देश दे रहा हूँ वह कंबोडिया के लिए भी हैं। प्रचारक कंबोडिया ने बताया कि हमारी सात जमाअतें हैं और ढाई हज़ार के लगभग हमारी संख्या है।

...पुस्तक "Pathway to Peace" के संदर्भ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़तआला ने अध्यक्ष जमाअत थाईलैंड को निर्देश दिया कि जल्द इस पुस्तक का थाई भाषा में अनुवाद करें और फिर यह पुस्तक अपने अधिकारियों और राजनेताओं को दें।

...Aims सिस्टम के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अध्यक्ष मलेशिया से कहा कि आप इस बारे में इंडोनेशिया से मदद लें।

...जमाअत मलेशिया कुआला लुम्पुर शहर में अपना तीन मंजिला केंद्र बनाना चाहती है। अध्यक्ष महोदय एक ईंट साथ लेकर आए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने स्नेहवश अपनी 'अलैसल्लाहु बिकाफ़ि अबदिहि' और 'मौला बस' की अंगूठियाँ इस ईंट के साथ लगाकर दुआ की।

विभिन्न देशों की कार्यकारी समितियों की यह बैठक एक बजकर तीस मिनट पर समाप्त हुई। अंत में कार्यकारी समितियों के सदस्यों ने देशवार हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर लेने का सौभाग्य प्राप्त किया।

बाद में डेढ़ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने मस्जिद ताहा पधारकर नमाज़ ज़ुहर व अस्र एकत्रित करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़अपने निवास स्थान पर चले गए।

सिंगापुर से ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रस्थान। विदाई के पल

आज कार्यक्रम के अनुसार सिंगापुर से ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रस्थान था। विदाई का समय निकट आ रहा था। कार्यक्रम के अनुसार सवा पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़अपने निवास स्थान से 'मस्जिद ताहा' पधारे जहाँ से सामूहिक दुआ के बाद हवाई अड्डे के लिए प्रस्थान था।

मस्जिद के बाहर खुले आँगन में इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और आसपास के दूसरे देशों से आने वाले पुरुष और महिला सदस्य बड़ी संख्या में एकत्रित थे। बच्चियाँ विदाई की प्रार्थनात्मक कविताएँ पढ़ रही थीं, छोटे-बड़े पुरुष और महिलाएँ हर एक की आँखों में आँसू थे। जब हुज़ूर अनवर मस्जिद ताहा पहुँचे तो सभी ने अपने हाथ ऊपर उठाते हुए और रोते हुए अपने प्यारे आक़ा के प्रति श्रद्धा, प्रेम और निष्ठा का इजहार किया। हर एक की नज़र अपने प्यारे आक़ा के चेहरे पर केंद्रित थी और आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने स्नेहवश कुछ देर के लिए महिलाओं के हिस्से में पधारे। जहाँ महिलाएँ दर्शन के सौभाग्य से लाभान्वित होती रहीं। बहुत ही मार्मिक माहौल था। फिर हुज़ूर अनवर पुरुष सदस्यों के पास आए और जोशपूर्ण सामूहिक दुआ करवाई। दुआ में भी यह लोग रोते रहे।

प्रार्थना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने अपना हाथ ऊपर उठाकर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और हुज़ूर अनवर की गाड़ी मस्जिद के बाहरी गेट से निकलकर हवाई अड्डे के लिए रवाना हुई और हुज़ूर अनवर के यह प्रेमी दूर तक अपने हाथ हिलाकर अपने प्यारे आक़ा को विदाई कहते रहे।

छह बजकर पचास मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़की हवाई अड्डे पर पधारने हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़के हवाई अड्डे पर आगमन से पहले सामान की बुकिंग और बोर्डिंग कार्ड प्राप्त करने की कार्रवाई पूरी हो चुकी थी।

हवाई अड्डे पर हुज़ूर अनवर को विदाई कहने के लिए इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, फिलीपींस, कंबोडिया और बर्मा के अमीर, अध्यक्ष और प्रचारक और अन्य जमाअती पदाधिकारी उपस्थित थे। लज्ना की अध्यक्षा इंडोनेशिया, मलेशिया और सिंगापुर भी अपनी कुछ पदाधिकारियों के साथ उपस्थित थीं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने स्नेहवश सभी सदस्यों को हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाजा और अस्सलामो अलैकुम कहा और विशेष लाउंज में पधारे।

एक विशेष प्रोटोकॉल व्यवस्था के तहत जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़जहाज़ पर सवार होने के लिए एक बग्गी के ज़रिए गेट C30 के लिए रवाना हुए तो रास्ते में विभिन्न गेट्स पर अहमदी सदस्य और परिवार अपनी-अपनी उड़ानों की प्रतीक्षा में खड़े थे। कुछ मलेशिया जा रही थीं और कुछ इंडोनेशिया और कुछ दूसरे देशों के लिए रवाना हो रही थीं। इन सभी ने अप्रत्याशित रूप से अचानक हुज़ूर अनवर को देखा तो दौड़कर हुज़ूर अनवर की ओर आईं। पुरुष सदस्यों ने हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया और महिलाएँ दर्शन के सौभाग्य से लाभान्वित होती रहीं और हज़रत बेगम साहिबा मद्द ज़िल्लुहा आली से भी मिलती रहीं और आखिरी पलों में एक बार फिर अपने प्यारे आक़ा के दीदार और दर्शन के सौभाग्य से लाभान्वित हुईं और हुज़ूर अनवर की कृपा से हिस्सा पाया।

पौने सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़जहाज़ पर सवार हुए। ब्रिटिश एयरवेज़ की उड़ान BA015 साढ़े सात बजे रात सिंगापुर से सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) के लिए रवाना हुई।

01 अक्टूबर, मंगलवार 2013 ई.

ऑस्ट्रेलिया में शुभ आगमन और जोरदार स्वागत

सात घंटे 35 मिनट की लगातार उड़ान के बाद ऑस्ट्रेलिया के स्थानीय समय के अनुसार 01 अक्टूबर, मंगलवार सुबह पाँच बजकर पाँच मिनट पर जहाज़ सिडनी ऑस्ट्रेलिया के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे Kings Ford Smith पर उतरा और वह ऐतिहासिक पल आ पहुँचा जब हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल खामिस ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के पवित्र कदम दूसरी बार ऑस्ट्रेलिया की इस धरती पर और दुनिया के इस महाद्वीप पर पड़े। (ऑस्ट्रेलिया का समय सिंगापुर से दो घंटे आगे है और लंदन से दस घंटे आगे है)

ज्योंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़जहाज़ से

शेष पृष्ठ 12 पर

"या मन इसमा दवा व ज़िक्रहु शिफ़ा" इस दुआ का हवाला और इसकी हक़ीकत क्या है?
रोज़े के बग़ैर रमज़ान का इतिकाफ़ बिदत तो शुमार नहीं होता और क्या रोज़े के बग़ैर इतिकाफ़ की कोई सुनत या अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कोई मिसाल मिलती है?
सोमवार और गुरुवार को नफ़ली रोज़े रखने में क्या हिकमत है, नेज़ इन दो ऐयाम के इलावा और दिनों में भी नफ़ली रोज़े रखे जा सकते हैं?
सूद लेना और देना हराम है, मग़रिबी दुनिया में जब कोई अपना मकान ख़रीदना चाहता है तो उसे उस पर भी सूद देना पड़ता है। तो क्या एक मुसलमान उन मुल्कों में अपना घर नहीं ख़रीद सकता?
रमज़ान में घरों को सजाने और रमज़ान कैलेंडर बनाने के बारे में रहनुमाई

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 55)

प्रश्न : मीरपुर आज़ाद कश्मीर से एक खातून ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखा कि ला-इलाज मरीज़ों पर पढ़ कर दम करने वाली एक दुआ "या मन इसमा दवा व ज़िक्रहु शिफ़ा" है। इस दुआ का हवाला और इसकी हक़ीकत क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने पत्र तिथि 9 अप्रैल 2022 ई. में इस सवाल के बारे में निम्नलिखित इरशादात फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर : मेरे इल्म में तो ऐसी कोई दुआ नहीं है जो आपने अपने ख़त में तहरीर की है। बल्कि अहादीस में यह वर्णन मिलता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद भी और सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सूरत फातिहा, मऊविज़तैन (यानी सूरत अल-फ़लक़ और सूरत अन-नास) और बज़ और दुआओं के ज़रिए बुख़ार, मुख़्तलिफ बीमारियों और साँप और बिच्छू वग़ैरह के काटने पर दम कर लिया करते थे।

इसलिए अहादीस में यह वाक़िया आता है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की एक जमाअत किसी सफ़र पर रवाना हुई और यह लोग एक क़बीले के पास आकर ठहरे और उनसे कुछ खाने के लिए तलब किया लेकिन क़बीले वालों ने उनकी मेहमान नवाज़ी से इनकार कर दिया। फिर उस क़बीले के सरदार को साँप या बिच्छू ने काट लिया और क़बीले वालों ने उसके इलाज की पूरी कोशिश की लेकिन सरदार को कोई अफ़ाक़ा न हुआ। किसी ने मशवरा दिया कि जो बाहर से लोग हमारे पास आकर ठहरे हैं, उनसे भी पूछा जाए, शायद उनमें से किसी के पास कोई दवा हो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से पूछने पर एक सहाबी ने कहा कि हाँ, मैं एक दम जानता हूँ लेकिन चूँकि तुम लोगों ने हमारी मेहमान नवाज़ी नहीं की, इसलिए अब मैं तुम्हारे सरदार पर दम नहीं करूँगा। इसलिए उस क़बीले वालों ने बकरियों का एक रेवड़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को देने का वादा किया, जिस पर उस सहाबी ने सूरत फातिहा पढ़ कर क़बीले के सरदार पर दम किया तो वह सूरत अल-फातिहा की बरकत से ठीक हो कर इस तरह चलने-फिरने लगा कि गोया उसको किसी चीज़ ने काटा ही न हो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने क़बीले वालों से बकरियाँ ले लीं। एक शख़्स ने कहा कि इन बकरियों को आपस में तक़सीम कर लेते हैं, लेकिन जिस सहाबी ने दम किया था, उन्होंने मशवरा दिया कि जब तक हम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हो कर यह वाक़िया बयान न कर लें और मालूम न कर लें कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें क्या हुक्म देते हैं, उस वक़्त तक हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। फिर यह लोग हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और सारा वाक़िया बयान किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम्हें कैसे इल्म हुआ कि सूरत फातिहा दम करने वाली सूरत है। तुमने बिल्कुल ठीक किया है, इन बकरियों को आपस में तक़सीम कर लो और मेरा भी एक हिस्सा मुक़र्रर करो। और यह फरमा कर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुस्करा दिए। (बुख़ारी, किताबुत्तिब, बाबुन्नफ़सि फिर्रुक़्या)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम "अज़्हिबिल बास रब्बन्नास बियदिकश शिफा ला काशिफा लहु इल्ला अंत" (यानी ऐ लोगों के रब! तू इस तकलीफ को दूर फरमा दे, शिफा तेरे ही हाथ में है, तेरे सिवा कोई इस तकलीफ को दूर नहीं कर सकता) की दुआ पढ़ कर दम किया करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब इस्तिहबाबे रुक़्यतिल मरीज़)

इसी तरह अहादीस से यह भी पता चलता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दम करते वक़्त फूँक भी मारा करते थे।

(सुनन इब्ने माजा, किताबुत्तिब, बाबुन्नफ़सि फिर्रुक़्या)

यही तरीक़ हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप अलैहिस्सलाम के सहाबा का भी मिलता है। इसलिए हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: एक दफ़ा आजिज़ राक़िम लाहौर से कादियान आया हुआ था और जमाअत लाहौर के कुछ और अस्हाब भी साथ थे। सूफ़ी अहमद दीन साहिब मरहूम ने मुझसे ख़्वाहिश की कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की खिदमत में सिफारिश करके सूफ़ी साहिब के सीने पर दम करा दूँ। इसलिए हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम कूचा बंदी में से अन्दरून खाना जा रहे थे, जबकि मैंने आगे बढ़ कर सूफ़ी साहिब को पेश किया और उनकी दरख़्वास्त अर्ज़ की। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने कुछ पढ़ कर सूफ़ी साहिब के सीने पर दम कर दिया (फूँक मारा) और फिर अन्दर तशरीफ ले गए। (ज़िकरे-ए-हबीब, मुसन्निफा हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 137) इसी तरह हज़रत पीर सिराजुल हक़ साहिब नोमानी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फरमाते हैं: एक दफ़ा का वर्णन है कि मैं सरसावह से चल कर कादियान शरीफ हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत मौलाना मुरशिदना नूरुद्दीन साहिब खलीफ़तुल मसीह अलैहिस्सलाम भी आए हुए थे और सुबह की नमाज़ पढ़ कर बैठे थे और हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम भी तशरीफ रखते थे। हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि पीर साहिब बहुत से पीर देखे कि वह अमलियात और तावीज़ करते हैं, कोई अमल आप को भी याद है जिस को देख कर हमें भी यक़ीन आ जाए कि अमल होता है। मैंने अर्ज़ किया कि हाँ, याद है। फ़रमाया: दिखाओ। और मैंने अर्ज़ की कि हाँ, वक़्त आने दीजिए, दिखला दूँगा। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ज़रूर साहिबज़ादा साहिब को याद होगा, उनके बुज़ुर्गों से अमल चले आते हैं। कोई दो घंटे के बाद एक शख़्स आया जिसको ज़ातुल जन्ब यानी पसली का दर्द शिद्दत से था। मैंने अर्ज़ की कि देखिए, इस पर अमल करता हूँ। हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हाँ, अमल करो। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया कि हाँ, अमल करो। मैंने उसी शख़्स पर दम किया, उसको दर्द से बिल्कुल ख़ुदा तआला ने आराम कर दिया और शिफा दी। जब उसको आराम हो गया तो हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेस्मरिज़्म है। मैंने उस ज़माने में मेस्मरिज़्म का नाम भी नहीं सुना था और न मैं जानता था कि मेस्मरिज़्म क्या चीज़ होता है। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: साहिबज़ादा साहिब, तुमने क्या पढ़ा था? मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, मैंने अलहम्द शरीफ पढ़ी थी।

(तज़किरतुल महदी, पृष्ठ 186, मतबूआ 1914 ई., टाइटल ज़ियाउल इस्लाम प्रेस कादियान)

पस आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप अलैहिस्सलाम के सहाबा किराम अलैहिमुस्सलाम से दम करना साबित है, जिस में अल्लाह तआला महज़ अपने फज़्ल से, उन कुरआनी सूरतों और उन पाकीज़ा अज़्कार की बरकत और बुज़ुर्गों की दुआ के नतीजे में मरीज़ को शिफा अता फरमा देता है।

प्रश्न : जर्मनी से एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला से दरयाफ़्त किया कि रोज़े के बग़ैर रमज़ान का इतिकाफ़ बिदत तो शुमार नहीं होता और क्या

रोज़े के बग़ैर इतिकाफ़ की कोई सुनत या अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कोई मिसाल मिलती है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब मूरख़ा 10 मई 2022 ई. में इस सवाल का दर्ज़ ज़ैल जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुनत से तो यही साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रमज़ान का इतिकाफ़ रोज़ों के साथ ही फ़रमाया करते थे। इसी लिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि "अस्सुन्नतु अलल मुतकिफि अन ला यऊदा मरीज़न व ला यशहदा जनाज़तन व ला यमिस्सा मरअतन व ला युबाशिरहा व ला यखरुजा लिहाज्जतिन इल्ला लिमा ला बुद्दा मिन्हु व ला इतिकाफा इल्ला बिसौमिन व ला इतिकाफा इल्ला फी मस्जिदिन जामे" (सुनन अबी दाऊद, किताबुस्सौम, बाबुल मुतकिफि यऊदुल मरीज़) यानी सुनत यह है कि मुतकिफ़ किसी मरीज़ की इयादत और नमाज़े जनाज़ा के लिए मस्जिद से बाहर न जाए और बीवी को (शहवत के साथ) न छुए और न उसके साथ मुबाशरत करे और सिवाए इनसानी ज़रूरत (क़ज़ाए हाजत वग़ैरह) के किसी और ज़रूरत के लिए मस्जिद से बाहर न निकले और रोज़ों के बग़ैर इतिकाफ़ दुरुस्त नहीं और जामे मस्जिद के सिवा किसी और जगह इतिकाफ़ दुरुस्त नहीं।

पस मसनून इतिकाफ़ के बारे में सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उलमा व फुकहा का यही मौक़िफ है कि उसके लिए रोज़े रखने ज़रूरी हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुनते मुतवातिरा यही थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रमज़ान के आख़िरी दस दिन मस्जिद में इतिकाफ फ़रमाया करते थे।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल इतिकाफ, बाब इतिकाफिल अश्रिल आख़िरी मिन रमज़ान)

बाक़ी जहाँ तक रमज़ान के मसनून इतिकाफ के इलावा आम इतिकाफ करने या किसी नज़र का इतिकाफ करने की बात है तो ऐसा इतिकाफ रोज़े के बग़ैर भी किया जा सकता है और यह इतिकाफ कुछ दिनों या कुछ घंटों का भी हो सकता है। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है, वह कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत में अर्ज़ किया कि मैंने ज़माने जाहिलियत में नज़र मानी थी कि मैं एक रात के लिए मस्जिदे हराम में इतिकाफ करूँगा। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अपनी नज़र को पूरा करो। (सुनन तिरमिज़ी, किताबुन्नुज़ूर वल ईमान, बाब मा जाआ फी वफाइन्नज़)

पस खुलासा कलाम यह कि रमज़ान का मसनून इतिकाफ रोज़ों के साथ, रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में मस्जिद में हो सकता है। जबकि रमज़ान के इलावा आम इतिकाफ रोज़ों के बग़ैर और कम या ज़्यादा वक़्त के लिए हो सकता है।

प्रश्न : जामिआ अहमदिया कनैडा के एक तालिब इल्म ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमते अक़्दस में इस्तिफ़सार भेजा कि उमूमन सोमवार और गुरुवार को नफ़ली रोज़े रखने में क्या हिकमत है, नेज़ इन दो ऐयाम के इलावा और दिनों में भी नफ़ली रोज़े रखे जा सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब मूरख़ा 10 मई 2022 ई. में इस सवाल के बारे में दर्ज़ ज़ैल इरशादात फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर : सोमवार और गुरुवार को नफ़ली रोज़ा रखने की मुख़्तलिफ वजूहात अहादीस में बयान हुई हैं। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सोमवार और गुरुवार के दिन इनसानों के आमाल अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश किए जाते हैं और मैं चाहता हूँ कि मेरे आमाल ऐसी हालत में पेश हों कि मैं रोज़े से हूँ। (सुनन तिरमिज़ी, किताबुस्सौम, बाब मा जाआ फी सौमे यौमिल इस्नैनि वल खमीस) इसी तरह एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सोमवार और गुरुवार को जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं और हर उस शख़्स को बख़्श दिया जाता है जिसने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो। (सुनन तिरमिज़ी, किताबुल बिर्रि वस्सिलह, बाब मा जाआ फिल मुतहाजिरैन) फिर एक और हदीस में है कि सोमवार के रोज़े की बाबत हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस दिन मैं पैदा हुआ था और उसी दिन मुझ पर वही का नुज़ूल शुरू हुआ था।

(सहीह मुस्लिम, किताबुस्सियाम, बाब इस्तिहबाबे सियामे सलासते अय्यामिन मिन कुल्लि शहरिन व सौमे यौमे अरफ़ता व आशूरा वल इस्नैनि वल खमीस)

सोमवार और गुरुवार को नफ़ली रोज़ा रखना हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उमूमी सुनत थी। (सुनन नसाई, किताबुस्सियाम, बाब सौमुन्नबिय्यि सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बिआबी हुव व उम्मी व जिक्रुख़्तिलाफिन्नाकिलीना लिल खबरि फी ज़ालिक) इसी तरह ऐयामे बीज़ यानी हर महीने में चाँद की तेरह, चौदह और पंद्रह तारीख को भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बड़ी बाक़ायदगी के साथ रोज़ा रखा करते थे। (सुनन नसाई, किताबुस्सियाम, सौमुन्नबिय्यि सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बिआबी हुव व उम्मी व जिक्रुख़्तिलाफिन्नाकिलीना लिल खबरि फी ज़ालिक)

इलावा यौमे अरफ़ह (9 ज़िलहिज्जा) और यौमे आशूरा (10 मुहर्रम) के रोज़े की भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़ी फज़ीलत बयान फरमाई है। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सियाम, बाब इस्तिहबाबे सियामे सलासते अय्यामिन मिन कुल्लि शहरिन व सौमे यौमे अरफ़ता व आशूरा वल इस्नैनि वल खमीस) बल्कि जो शख़्स हज पर मौजूद हो उसके लिए यौमे अरफ़ह का रोज़ा रखना मना है। (सुनन इब्ने माजा, किताबुस्सियाम, बाब सियामे यौमे अरफ़ह)

अतः दोनों ईदों के दिनों और ऐयामे तशरीक (11, 12 और 13 ज़िलहिज्जा) जो कि अहले इस्लाम के लिए ईद और खाने-पीने के दिन हैं (सुनन तिरमिज़ी, किताबुस्सौम, बाब मा जाआ फी कराहियतिस्सौमि फी ऐयामित्तशरीक) के इलावा इनसान किसी भी दिन नफ़ली रोज़ा रख सकता है। ताहम सिर्फ जुमा का दिन नफ़ली रोज़े के लिए ख़ास करना मना है। (सुनन तिरमिज़ी, किताबुस्सौम, बाब मा जाआ फी कराहियते सौमे यौमिल जुमअति वह्दहु) और जो शख़्स हज पर हो और उसने हज के साथ उमरा का भी फ़ायदा उठाया हो और उसमें कुर्बानी करने की ताक़त न हो तो वह ऐयामे तशरीक के तीन रोज़े हज के ऐयाम में रखेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाब सियामे ऐयामित्तशरीक)

नफ़ली रोज़ों के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक तफ्सीली हिदायत का वर्णन हदीस में यूँ मिलता है। हज़रत अबू क़तादा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सौमे दह्र (यानी सारी उम्र के रोज़े) के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऐसे शख़्स ने न रोज़ा रखा और न इफ़्तार किया (गोया ऐसे रोज़े को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नापसन्द फ़रमाया)। रावी कहते हैं कि फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से दो दिन रोज़ा रखने और एक दिन इफ़्तार करने के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कौन उस की ताक़त रखता है? रावी कहते हैं कि फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से एक दिन रोज़ा रखने और दो दिन इफ़्तार करने के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला हमें उस की ताक़त अता फ़रमाए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से एक दिन रोज़ा रखने और एक दिन इफ़्तार करने के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यह रोज़े मेरे भाई हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के हैं। रावी कहते हैं कि फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सोमवार के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यह वह दिन है जिस में मुझे पैदा किया गया, उसी दिन मुझे मबअस किया गया और उसी दिन मुझ पर (क़ुरआन) नाज़िल किया गया। रावी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हर महीने में तीन रोज़े रखना और एक रमज़ान के बाद दूसरे रमज़ान के रोज़े रखना सारी उम्र के रोज़ों के बराबर है। रावी कहते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अरफ़ह के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: गुज़रे हुए साल और आने वाले साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है। रावी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आशूरा के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यह रोज़ा रखना गुज़रे हुए एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है।

(सहीह मुस्लिम, किताबुस्सियाम, बाब इस्तिहबाबे सियामे सलासते अय्यामिन मिन कुल्लि शहरिन व सौमे यौमे अरफ़ता व आशूरा वल इस्नैनि वल खमीस)

प्रश्न : जर्मनी से एक खातून ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से दरयाफ़्त किया कि सूद लेना और देना हराम है, मग़रिबी दुनिया में जब कोई अपना मकान ख़रीदना चाहता है तो उसे उस पर भी सूद देना पड़ता है। तो क्या एक मुसलमान उन मुल्कों में अपना घर नहीं ख़रीद सकता? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब मूरख़ा 10 मई 2022 ई. में इस सवाल के बारे में दर्ज़ ज़ैल हिदायात फरमाईं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर : मग़रिबी दुनिया में मॉर्गेज के ज़रिए जो मकान ख़रीदे जाते हैं, उन में

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 04 December 2025 Issue No. 49

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

उमूमन बैंक या किसी मालियाती इदारे से क़र्ज़ हासिल किया जाता है, और जब तक यह क़र्ज़ वापस न हो जाए ऐसा मकान क़र्ज़ देने वाले बैंक या उस मालियाती इदारे ही की मिल्कियत रहता है। और बैंक या मालियाती इदारा अपने इस क़र्ज़ पर कुछ ज़ाएद रक़म भी वसूल करता है। जिस की वजह वह पैसे की Devaluation (मुद्रा-अवमूल्यन) बताते हैं।

चूँकि उन मुल्कों में हर इनसान अपने रहने के लिए भी मकान आसानी से नहीं ख़रीद सकता, इस लिए या तो उसे सारी ज़िंदगी किराए के मकान में रहना पड़ता है, जिस में उसे ज़िंदगी भर अदा किए गए किराए का उस मकान में रहने के इलावा और कोई फ़ायदा नहीं होता क्योंकि किराए की इतनी बड़ी रक़म अदा करने के बावजूद यह मकान कभी भी उस की मिल्कियत नहीं होता। या फिर वह उन मजबूरी के हालात में मॉर्गेज की सुहूलत से फ़ायदा उठा कर अपनी रहाइश के लिए एक घर ख़रीद लेता है। जिस पर उसे तक़रीबन उतनी ही मॉर्गेज की किस्त अदा करनी पड़ती है जिस क़दर वह मकान का किराया दे रहा होता है, लेकिन मॉर्गेज में उसे यह फ़ायदा होता है कि उन किस्तों की अदायगी के बाद यह मकान उस की मिल्कियत हो जाता है।

पस मॉर्गेज के ज़रिए मकान ख़रीदना एक मजबूरी और इज़्तिरार की कैफ़ियत है, जिस से सिर्फ अपनी रहाइश के लिए एक मकान की ख़रीद तक फ़ायदा उठाया जा सकता है। लेकिन मॉर्गेज के इस तरीक़े कार के ज़रिए कारोबार के तौर पर मकान दर मकान ख़रीदते चले जाना किसी सूरत में भी दुरुस्त नहीं और जमाअत इस अम्र की हरगिज हौसला अफ़ज़ाई नहीं करती, बल्कि उस से मना करती है।

प्रश्न : मोहतरिम नाज़िम साहिब दारुल इफ़्ता रबवा ने एक इस्तिफ़्ता बाबत क्रिसमस की तर्ज पर रमज़ान में घरों को सजाने और रमज़ान कैलेंडर बना कर ईद तक दिनों की गिनती करने के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से रहनुमाई चाही। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब मूरख़ा 10 मई 2022 ई. में इस मसले का दर्ज़ ज़ैल जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर : अस्ल बात यह है कि इस अम्र में भी हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद "इन्नमल आमालु बिन्निय्यात" को ही पेश नज़र रखना चाहिए। अगर तो रमज़ान में घरों को सजाने और रमज़ान कैलेंडर बनाने में नीयत यह हो कि अहले खाना और बच्चों को रमज़ान की अहमियत की तरफ तवज्जोह दिलाई जाए, घर में ऐसा माहौल बना कर घर वालों और ख़ास तौर पर बच्चों को रमज़ान की इबादत और दुआओं की अहमियत की तरफ मुतवज्जह किया जाए ता कि सहरी और इफ़्तारी के वक़्त वह इस माहौल को देख कर दुआ और इबादत में मशगूल हो सकें। और इस तरह रमज़ान के हर दिन का एक जोश और वलवले के साथ वह इस्तक़बाल कर के उस में नाज़िल होने वाली बरकतों से इस्तिफादा कर सकें तो इस नीयत के साथ ऐसा करने में बिज़ाहिर कोई हरज की बात नहीं।

लेकिन अगर सिर्फ दिखावा मतलूब हो और यह सारे पापड़ सिर्फ रिया और नुमायश के लिए बेले जाएँ और एक एक दिन इस सोच के साथ गुज़ारा जाए कि चलो अच्छा हुआ इतने दिन गुज़र गए, जिन से जान छूट गई, बाक़ी दिन भी जल्द गुज़र जाएँगे और फिर ईद मनाएँगे और ईद में भी हक़ीकी ख़ुशियाँ तलाश करने की बजाए सिर्फ ज़ाहिरी ख़ुशियों का ख़्याल रखा जाए तो इस नीयत के साथ घरों को सजाना और रमज़ान कैलेंडर बनाना हरगिज जाएज़ नहीं।

पस खुलासा कलाम यह कि अगर इस काम से अहले खाना में कोई पाक तब्दीली पैदा हो रही हो और उन्हें रमज़ान की बरकात की तरफ तवज्जोह पैदा हो कर उस से इस्तिफादा करने का मौक़ा मिले तो यह सजावट और कैलेंडर बनाना जाएज़ है। लेकिन अगर सिर्फ दिखावा करना और रमज़ान को एक चुटकी समझ कर गुज़ारना मक़सूद हो तो यह सजावट करना और ऐसे कैलेंडर बनाना नाजाएज़ है और बिदत शुमार होगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 9 का शेष

बाहर पधारे तो मुकर्रम महमूद अहमद शाहिद साहिब अमीर जमाअत ऑस्ट्रेलिया ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा। एक विशेष व्यवस्था के तहत हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विशेष लाउंज में पधारे। जहाँ जमाअत अहमदिया ऑस्ट्रेलिया के उप अमीर मुकर्रम खालिद सैफ़ुल्लाह साहिब और मुकर्रम मुहम्मद नासिर काहलून साहिब और अध्यक्ष ख़ुद्दामुल अहमदिया मुकर्रम राना इजाज़ अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा और हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

लज्ना की अध्यक्षा ऑस्ट्रेलिया, उपाध्यक्ष लज्ना ऑस्ट्रेलिया, पूर्व अध्यक्ष लज्ना ऑस्ट्रेलिया और मुकर्रम अमीर साहिब ऑस्ट्रेलिया की पत्नी ने हज़रत बेगम साहिबा मद्द ज़िल्लुहा आली को स्वागत कहा।

NSW विधान सभा के सदस्य "Hon. Kevin Conolly" हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़के स्वागत के लिए लाउंज में प्रतीक्षारत थे। उन्होंने सरकार की ओर से हुज़ूर अनवर को ऑस्ट्रेलिया आगमन पर स्वागत कहा। उन्होंने कहा कि वह जानते हैं कि इस देश में रहने वाले अहमदियों के लिए हुज़ूर अनवर का दौरा कितना महत्वपूर्ण है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने उनका आभार व्यक्त किया कि आप इस समय पाँच बजे सुबह हुज़ूर अनवर को प्राप्त करने के लिए हवाई अड्डे पर आए हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने उन सांसद से विभिन्न मामलों पर बातचीत की और मौजूदा आम चुनाव के संदर्भ में भी बात हुई। इस दौरान आव्रजन की कार्रवाई संबंधित विभाग ने स्वयं पूरी की। हवाई अड्डे पर सभी प्रबंध सरकार के सहयोग से हुए।

पाँच बजकर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़हवाई अड्डे से जमाअत के केंद्र बैतुल हुदा के लिए रवाना हुए।

जमाअत का यह केंद्र सिडनी शहर से बाहर Blacktown City Council के इलाके Marsden Park में स्थित है। सिडनी हवाई अड्डे से इस जगह की दूरी 60 किलोमीटर है। छह बजकर पचास मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़'बैतुल हुदा' पहुँचे जहाँ देश भर की जमाओं से आए हुए पुरुष और महिला सदस्यों ने अल्लाहु अकबर के नारे लगाते हुए अपने आक़ा को स्वागत कहा। बच्चों और बच्चियों ने स्वागत की प्रार्थनात्मक कविताएँ पढ़ते हुए हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा। दो बच्चों ने हुज़ूर अनवर और हज़रत बेगम साहिबा मद्द ज़िल्लुहा की सेवा में फूल पेश किए।

बच्चे और युवतियाँ अपने हाथों में अहमदियत के झंडे और देश का राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए अपने आक़ा को स्वागत कह रहे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सबके पास से गुजरते हुए अपना हाथ ऊपर उठाकर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और मिशन हाउस के आवासीय हिस्से में चले गए।

आज अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए सिडनी की स्थानीय जमाओं के अलावा पुरुष और महिला सदस्यों की एक बड़ी संख्या मेलबर्न से 876 किलोमीटर की दूरी दस से बारह घंटे में तय करके पहुँची थी। इसी तरह ब्रिस्बेन से आने वाले सदस्य और परिवार 924 किलोमीटर की दूरी दस से बारह घंटे में तय करके पहुँचे थे। एडिलेड से सड़क मार्ग से आने वाले लोग 1375 किलोमीटर की दूरी 21 घंटों में तय करके अपने आक़ा के स्वागत और दीदार के लिए सिडनी पहुँचे। इसी तरह पर्थ से हवाई जहाज़ से आने वाले पाँच घंटे की यात्रा तय करके सिडनी पहुँचे। अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए सैकड़ों की संख्या में यह लोग पुरुष और महिलाएँ और बच्चे-बच्चियाँ, अत्यधिक सुबह-सवेरे जब कि अभी हर तरफ अंधेरा ही था, 'बैतुल हुदा' पहुँचना शुरू हो गए थे।

सांसद Hon. Kevin Conolly हवाई अड्डे से 'मस्जिद बैतुल हुदा' तक हुज़ूर अनवर के काफिले के साथ आए और हुज़ूर अनवर को यहाँ तक छोड़कर फिर वापस गए।

शेष आगे ..

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad